1. भाषा

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i).

(ख) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

1. ज्ञान से संचित कोष को **व्याकरण** कहते हैं।
2. 14 सितम्बर को **हिन्दी दिवस** के रूप में मनाया जाता है।
3. शुद्ध बोलना और लिखना सीखने में **व्याकरण** हमारी सहायता करता है।
4. भाषा के दो रूप होते हैं—**मौखिक** और **लिखित**।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को ही मान्यता दी गई है।
2. विचारों को व्यक्त करने के तरीकों के आधार पर भाषा के तीन प्रमुख रूप हैं—(क) मौखिक भाषा, (ख) लिखित भाषा, (ग) सांकेतिक भाषा
3. सांकेतिक भाषा का प्रयोग कुछ विशेष स्थानों तथा अवसरों पर ही किया जा सकता है। मूक तथा बाधिर लोग सांकेतिक भाषा का प्रयोग करते हैं। यह संभव नहीं है कि संकेतों का सदैव वहीं अर्थ समझा जा सके जिनके लिए उनका प्रयोग हुआ है। अत: सांकेतिक भाषा को भाषा के मानक रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है।
4. भाषा वह माध्यम है, जिसके द्वारा हम बोलकर, लिखकर अथवा संकेतों द्वारा अपने विचारों का परस्पर आदान-प्रदान करते हैं।

2. वर्णमाला

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (i)

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. **वर्ण** भाषा की सबसे छोटी इकाई है।
2. विसर्ग (:) का उच्चारण **स्वर और व्यंजन के मध्यम** के रूप में करते हैं।
3. स्वर-रहित व्यंजन को लिखते समय उसके नीचे **हलन्त** लगाते हैं।
4. स्वर के भेद हैं—**हस्व स्वर**, **दीर्घ स्वर** तथा **प्लुत स्वर**।
5. वर्णों के क्रमबद्ध एवं व्यवस्थित समूह को **शब्द** कहते हैं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. हिन्दी वर्णमाला में कुल 52 वर्ण (11 स्वर + 33 व्यंजन + 3 अयोगवाह/अनुनासिक + 2 विशेष वर्ण + 3 आगत वर्ण) हैं।
2. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय हवा रुकावट के साथ मुँह से बाहर निकलती है और उनके उच्चारण में स्वरों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें व्यंजन कहते हैं। व्यंजन के चार भेद होते हैं—(1) स्पर्श व्यंजन, (2) उत्क्षिप्त व्यंजन, (3) अन्त:स्थ व्यंजन, (4) ऊष्म व्यंजन।
3. **अनुस्वार–**'अं' या इसका चिह्न (ं) अनुस्वार कहलाता है। इसका उच्चारण नाक से होता है। इसका प्रयोग वर्णो के ऊपर बिन्दु के रूप में किया जाता है; जैसे—हंस, वंश आदि।

   अनुनासिक–'अँ' या इसका चिह्न (ँ) अनुनासिक कहलाता है। इसे चन्द्र-बिन्दु भी कहते हैं। इसका उच्चारण नाक और मुँह से होता है; जैसे—मुँह, आँगन आदि।
4. जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय वायु कण्ठ, तालु, मूर्धा या ओठों का स्पर्श करके बाहर आती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। 'ड़' और 'ढ़' को मिलाकर स्पर्श व्यंजन 27 हैं।

   क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

   च्, छ्, ज्, झ्, ञ्

   ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्

   त्, थ्, द्, ध्, न्

   प्, फ्, ब्, भ्, म्
5. स्वर के तीन भेद होते है—(i) हस्व स्वर, (ii) दीर्घ स्वर, (iii) प्लुत स्वर।

3. स्वरों की मात्राएँ

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (ii), 3. (i), 4. (iii), 5. (ii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. वर्णों का एक ऐसा समूह, जिसका कोई निश्चिय अर्थ न हो शब्द कहलाता है।
2. रचना के आधार पर शब्दों के तीन भेद हैं—(क) रूढ़ शब्द, (ख)यौगिक शब्द, (ग) योगरूढ़ शब्द।
3. अर्थ के आधार पर सार्थक शब्दों के निम्नलिखित भेद माने जाते हैं—

   (क) पर्यायवाची, (ख) विलोम,

   (ग) अनेकार्थी, (घ) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द,

   (ङ) एकार्थी (च) समरूप-भिन्नार्थक शब्द।
4. स्रोत अथवा उत्पत्ति के आधार पर शब्दों के पाँच भेद होते हैं—

   (क) तत्सम शब्द (ख) तद्भव शब्द

   (ग) देशज शब्द (घ) विदेशी शब्द

   (ङ) संकर शब्द
5. **(क) सार्थक शब्द–**जिन शब्दों का कुछ अर्थ होता है, उन्हें सार्थक शब्द कहते हैं; जैसे—कमल, भाई, देश आदि।

(ख) निरर्थक शब्द–जिन शब्दों का कुछ अर्थ नहीं होता, उन्हें निरर्थक शब्द कहते हैं; जैसे—खट, किच, चूँ, आदि।

4. सन्धि

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (ii), 3. (iii), 4. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. दो निकटवर्ती वर्णों अथवा ध्वनियों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन (विकार) उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं। सन्धि के भेद है—(i) स्वर संधि, (ii) व्यंजन संधि।
2. **व्यंजन संधि–**किसी व्यंजन का किसी स्वर अथवा व्यंजन से मेल होने पर जो परिवर्तन (विकारी) उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे—

   व्यंजन + स्वर = जगत् + ईश = जगदीश

   व्यंजन + स्वर = राम + अयन = रामायण
3. **विसर्ग संधि–**विसर्ग (:) के बाद स्वर या व्यंजन आने से जो परिवर्तन (विकार) उत्पन्न होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते हैं; जैसे—

   मन: + रथ = मनोरथ

   रज: + गुण = रजोगुण

   दु: + जन = दुर्जन

   पुन: + जन्म = पुनर्जन्म
4. दो स्वरों के परस्पर मेल से जो परिवर्तन होता है, वह **स्वर-संधि** कहलाता है; जैसे—

   पर + अधीन = पराधीन   अ + अ = आ

   नदी + ईश = नदीश   ई + ई = ई

   स्वर सन्धि के मुख्यत: पाँच प्रकार होते हैं—

   (1) दीर्घ सन्धि, (2) गुण सन्धि, (3) वृद्धि सन्धि, (4) यण सन्धि, (5) अयादि सन्धि।

5. उपसर्ग और प्रत्यय

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (i), 4. (ii), 5. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. वे शब्दांश जो मूल शब्द से पहले जुड़कर उस शब्द का अर्थ बदल दे या उसके अर्थ में विशेषण उत्पन्न कर दे, उन्हें उपसर्ग कहते हैं।
2. हिन्दी में विभिन्न प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग करके शब्द रचना की जाती है, इनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं—
   (i) संस्कृत के उपसर्ग
   (ii) हिन्दी के उपसर्ग
   (iii) उर्दू के उपसर्ग
   (iv) उपसर्ग की तरह प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत के अव्यय
3. वे शब्दांश जो मूल शब्द से पहले जुड़कर उस शब्द का अर्थ बदल दे या उसके अर्थ में विशेषण उत्पन्न कर दे, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।

   जो शब्दांश मूल शब्दों के अन्त में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं।
4. जो शब्दांश मूल शब्दों के अन्त में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें **प्रत्यय** कहते हैं। हिंदी भाषा में प्रत्यय के मुख्यत: दो भेद होते हैं— कृत प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।

6. समास

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (i), 4. (i), 5. (i).

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. समास रचना में दो पद होते हैं—पूर्वपद और **उत्तरपद**।
2. समास का अर्थ है **संयोग**।
3. समास के कुल **छः** भेद होते हैं।
4. शब्दों के **नवीन** रूप समास कहलाते हैं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. परस्पर संबंध रखने वाले दो अथवा दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक संक्षिप्त और नवीन शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।
2. **समास के भेद**—1. तत्पुरुष समास, 2. द्वंद्व समास, 3. द्विगु समास, 4. कर्मधारय समास, 5. बहुव्रीहि समास, 6. अव्ययीभाव समास।
3. **कर्मधारय समास**—जिस समास का पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। इसमें उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे—

समस्तपद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास-विग्रह
हरीमिर्च	हरी	मिर्च	हरी है जो मिर्च
मृगनयनी	मृग	नयनी	मृग के समान नेत्रों वाली

बहुव्रीहि समास—जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि कोई अन्य पद प्रधान होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे—

समस्तपद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास-विग्रह
नीलकंठ	नील	कंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
लंबोदर	लंबा	उदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश

7. संज्ञा

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (ii), 3. (i), 4. (iii).

(ख) भाववाचक संज्ञा से रिक्त स्थान भरिए–

1. कुतुबमीनार की **ऊँचाई** देखकर आश्चर्य होता है।
2. कृष्ण और सुदामा की **मित्रता** पर सभी को गर्व है।

3. गणतन्त्र-दिवस पर वायुयानों की **उड़ान** देखने योग्य थी।
4. मोहन की **गरीबी** देखकर तरस आ गया।
5. नीति को भीड़ में **घबराहट** होने लगती है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. किसी व्यक्ति, प्राणी, स्थान, वस्तु और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।
2. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिस संज्ञा से किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष और वस्तु विशेष का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सोहन, सुनिता, चेतक, हिमालय, गंगा आदि।

   यहाँ सोहन व सुनिता—व्यक्ति का नाम, चेतक—घोड़े का नाम, हिमालय—पर्वत का नाम तथा गंगा—नदी का नाम है।

   जातिवाचक संज्ञा—जिस संज्ञापद से किसी प्राणी, वस्तु आदि की जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हें; जैसे—पक्षी, अध्यापक, लड़की, बच्चे, गाय, पुस्तक, चिड़िया आदि शब्द भी पूरी जाति के बोधक है।
3. **भाववाचक संज्ञा**—जिस संज्ञापदों से पदार्थो के धर्म, गुण, दोष, अवस्था और विभिन्न व्यापार आदि का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। ये गुण, दोष, भाव, धर्म आदि प्राय: अमूर्त होते हैं; जैसे—पढ़ाई, सुन्दरता, बुढ़ापा, कौशल, धैर्य, लड़कपन, तरुणाई आदि।

   यहाँ पढ़ाई धर्म है; सुन्दरता, कौशल, धैर्य गुण हैं तथा बुढ़ापा, लड़कपन और तरुणाई अवस्था हैं।
4. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिस संज्ञा से किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष और वस्तु विशेष का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सोहन, सुनिता, चेतक, हिमालय, गंगा आदि।

   यहाँ सोहन व सुनिता—व्यक्ति का नाम, चेतक—घोड़े का नाम, हिमालय—पर्वत का नाम तथा गंगा—नदी का नाम है।

8. लिंग

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (ii), 4. (iii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

पुल्लिग शब्द से स्त्रीलिंग शब्द बनाने के कुछ नियम निम्नलिखित हैं—

1. अ के स्थान पर आ लगाकर—

वृद्ध	वृद्धा

2. अ/आ के स्थान पर ई लगाकर—

कबूतर	कबूतरी

3. आनी प्रत्यय लगाकर—

क्षत्रिय	क्षत्राणी

4. इन प्रत्यय लगाकर—

माली	मालिन

5. मान प्रत्यय को मती तथा वान प्रत्यय को वती में बदलकर—

शक्तिमान	शक्तिमती

6. इका प्रत्यय लगाकर—

प्रेषक	प्रेषिका

7. आ के स्थान पर इया प्रत्यय लगाकर—

बंदर	बंदरिया

8. नी प्रत्यय लगाकर—

भील	भीलनी

9. कुछ शब्द स्त्रीलिंग एवं पुल्लिग रूप में एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न होते हैं; जैसे—

पति	पत्नी

9. वचन

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (iii), 4. (ii), 5. (i).

(ख) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. हिन्दी में दो वचन होते है—एकवचन और बहुवचन।
2. सर्वनाम के निम्नलिखित छ: भेद होते हैं—
   - **(i)** पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'आ' को 'े' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं।
   - **(ii)** स्त्रीलिंग शब्दों के अन्तम 'अ' के साथ 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं।
   - **(iii)** स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'आ' के साथ 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं।
3. शब्द के जिस रूप से उसके एक अथवा एक से अधिक होने का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।

10. कारक

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (i), 4. (i), 5. (ii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **कर्ता कारक–**संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द का वह रूप जिससे किसी कार्य (क्रिया) को संपन्न करने वाले का बोध हो, कर्ता कारक कहलाता है। कर्ता कारक का चिह्न 'ने' है।

   कर्मकारक–किसी वाक्य में क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है, वह कर्मकारक कहलाता है। कर्म कारक का चिह्न 'को' हैं।

   राकेश घोड़ों को चरा रहा है।

   माली पौधों को सींच रहा है।

   सुरेश लकड़ी काटता है।

2. **करण कारक**—क्रिया को संपन्न करने के लिए उपयोग में लाए गए साधन को करण-कारक कहते हैं। करन-कारक के परसर्ग 'से' तथा 'के द्वारा' हैं; जैसे—

रमेश गेंद से खेलता था।

दर्जी कैंची से कपड़े काटता है।

उपयुक्त वाक्यों में गेंद एवं कैंची साधन है, जिनके द्वारा खेलने और काटने की क्रियाएँ हो रही है अत: ये कारण कारक है।

अपादान कारक—संज्ञा तथा सर्वनाम के जिस रूप से अलगाव का भाव व्यक्त हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। तुलना करने, दूरी बताने, डरने तथा लजाने आदि के भाव का पता भी अपादान कारक से चलता है। अपादान कारक का चिह्न 'से' (अलग होने के अर्थ में) है; जैसे—

वृक्ष से पत्ते गिर रहे हैं।

मोहन सोहन से मोटा है।

प्रथम वाक्य में पत्ते का वृक्ष से गिरना और दूसरे वाक्य में राम की श्याम से तुलना की गई है। अत: वृक्ष और श्याम अपादान कारक हैं।

3. हिन्दी के कारक में निम्नलिखित आठ भेद होते हैं—

कारक	**कारक चिह्न/परसर्ग**
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से, के द्वारा
संप्रदान	के लिए, को
अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
संबंध	ना, नी, ने, का, की, के, रा, री, रे
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे!, अरे!, ओ!

4. **अधिकरण कारक**—संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार अर्थात् स्थान, समय, अवस्था आदि का ज्ञान होता है, वे अधिकरण कारक कहलाते हैं। अधिकरण कारक के चिह्न 'में', 'पर' हैं; जैसे—तालाब में बहुत-सी मछलियाँ हैं।

बंदर पेड़ पर चढ़ते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'तालाब में' और 'पेड़ पर' दोनों ही अधिकरण कारक हैं क्योंकि 'मछलियों' का आधार 'तालाब' है और 'बंदरों' का आधार 'पेड़' है।

5. संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य पदों विशेषत: क्रिया से उसके संबंध का पता चलता है, उसे कारक कहते हैं।

कारक की स्पष्टता के लिए संज्ञा या सर्वनाम शब्द के साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें कारक की विभक्ति या परसर्ग कहते हैं।

विद्यार्थी कलम से पत्र लिखता है।

रितिक वाचनालय में समाचार-पत्र पढ़ता है।

11. सर्वनाम

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i), 3. (i), 4. (iii), 5. (iii).

(ख) उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

1. जिस सर्वनाम शब्द का वाक्य के दूसरे सर्वनाम शब्द से **सम्बन्ध** स्थापित किया जाए, उसे **सम्बन्धवाचक** कहते हैं।
2. ऐसे सर्वनाम शब्द जो बोलने वाला **अपने लिए** प्रयोग में लाता है, उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।
3. जो सर्वनाम शब्द सुनने वाले के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें **मध्यम पुरुष सर्वनाम** कहते हैं।
4. निश्चित वस्तु के लिए प्रयोग किए जाने वाले सर्वनाम **निश्चयवाचक** कहलाते हैं।
5. बोलने वाला या **सुनने वाला** जिस सर्वनाम शब्द को किसी अन्य व्यक्ति के लिए प्रयोग में लाता है, उसे **अन्य** कहते हैं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. संज्ञा पदों की पुनरावृत्ति को दूर करने के लिए उनके (संज्ञा पदों के) स्थान पर प्रयुक्त किए जाने वाले पद सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—वह, वे, यह, ये, तू, तुम, मैं, हम और आप शब्द सर्वनाम हैं।

सर्वनाम के छ: भेद होते हैं—(i) पुरुषवाचक सर्वनाम, (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम, (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, (iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम, (v) संबंधवाचक सर्वनाम, (vi) निजवाचक सर्वनाम।

2. स्वयं करें।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—(क) उत्तम पुरुष, (ख) मध्यम पुरुष और (ग) अन्य पुरुष।

(क) उत्तम पुरुष—मैं आम खाऊँगा।

(ख) मध्यम पुरुष—माताजी तुम्हें ढूँढ़ रहे थे।

(ग) अन्य पुरुष—उन्होंने गृह-कार्य पूरा कर लिया है।

4. **निश्चयवाचक सर्वनाम**—ऐसे सर्वनाम शब्द जो दूरवर्ती या समीवर्ती निश्चित व्यक्ति या वस्तु के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इन्हें संकेतवाचक भी कहते हैं क्योंकि ये संकेत करते हैं; जैसे—रोहित की दुकान यह नहीं, वह है।

इसने ही गमला तोड़ा था।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम—ऐसे सर्वनाम शब्दर जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का पता नहीं चलता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

किसी का बच्चा मेले में खो गया।

वहाँ कुछ गिरा पड़ा है।

सुरेश के साथ कोई जा रहा था।

12. विशेषण

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (i), 4. (ii), 5. (i)

(ख) दिए गए संकेतों के अनुसार रिक्त स्थान भरिए–

1. एक क्विंटल में **पाँच** किलोग्राम होते हैं।
2. आप **दूसरी** कक्षा में पढते हो।
3. एक दर्जन में **बारह** वस्तुएँ होती हैं।
4. भैंस का दूध **सफेद** होता है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता की विशेषता करने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।

   ये फल एकदम ताजे हैं। गुलाब सुन्दर पुष्प है।

2. विशेषण के चार भेद होते हैं—(i) गुणवाचक विशेषण, (ii) संख्यावाचक विशेषण, (iii) सार्वनामिक विशेषण, (iv) परिमाणवाचक विशेषण।

3. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग कि जाने वाले शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं, किंतु जब यही सर्वनाम शब्द किसी संज्ञा से पूर्व जुड़कर उसकी विशेषता बताते हैं, तो वे सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं।

सर्वनाम	**सार्वनामिक विशेषण**
वह दिल्ली जा रहा है।	वह लड़का दिल्ली जा रहा है।
ये मीठे फल हैं।	वे फल मीठे हैं।

4. **संख्यावाचक विशेषण और परिमाणवाचक विशेषण में अन्तर–**जो शब्द किसी संज्ञा से पूर्व उसकी संख्या के रूप में जुड़कर उसकी विशेषता बताते हैं उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं, किंतु यदि संख्याएँ किसी विशेष्य के परिमाण से पूर्व जुड़ी हों तो वे परिमाणवाचक विशेषण माने जाते हैं; जैसे—

संख्यावाचक विशेषण	मैंने दो पेन खरीदे हैं।
	बस में केवल बीस यात्री हैं।
परिमाणवाचक विशेषण	बीस मीटर कपड़ा शेष रह गया है।
	उसे पाँच लीटर दूध चाहिए।

5. तुलना के आधार पर विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं—(i) मूलावस्था, (ii) उत्तरावस्था, (iii) उत्तमावस्था

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
निकट	निकटतर	निकटतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम

13. क्रिया

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (iii), 3. (iii), 4. (ii), 5. (i).

(ख) कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द छाँटकर रिक्त की पूर्ति कीजिए–

1. अतिथियों ने भोजन **कर लिया है**।
2. आज अध्यापक जी विद्यालय नहीं **आए**।
3. तुम्हें अध्यापक जी ने **बुलाया है**।
4. हमने मेले से एक खिलौना **खरीदा**।
5. माली पौधों को पानी **दे रहा है**।

(ग) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जिस क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। सकर्मक क्रिया में क्रिया का फल कर्म पर पड़ता है; जैसे—

   अलिशा कविताएँ पढ़ रही है।

   रमा ने मोहन को लोरी सुनाई।

2. जिस क्रिया का फल कर्म पर नहीं पड़ता, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। अकर्मक क्रिया में क्रिया का फल कर्त्ता पर पड़ता है; जैसे—मोनिका हँसती है।

   इसमें 'हँसती' अकर्मक क्रिया है। मोनिका कर्त्ता है। हँसने की क्रिया उसके द्वारा की जा रही है। इसलिए हँसने का फल उस पर पड़ रहा है अत: हँसती अकर्मक क्रिया है।

3. स्वयं करें।

14. काल और वाच्य

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i), 3. (iii), 4. (iii), 5. (ii).

(ख) रिक्त स्थान की पूरा कीजिए–

1. क्रिया के होने के समय की जानकारी हमें **काल** से मिलती है।
2. क्रिया के जिस रूप से उसके **भूतकाल** में होने का पता चले, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं।
3. क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में घटित होने की जानकारी मिले, उसे **भविष्य** की क्रिया कहते हैं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए–

1. क्रिया के जिस रूप से उसके घटित होने के समय का पता चले, उसे काल कहते हैं।
2. भूतकाल के निम्नलिखित छः भेद होते हैं—

   (क) **सामान्य भूतकाल–**सीमा आई।

   (ख) **आसन्न भूतकाल–**हिरन वन में भाग गया है।

   (ग) **पूर्ण भूतकाल–**निकुंज घर जा चुका था।

   (घ) **अपूर्ण भूतकाल–**सिंह गुफा में सो रहा था।

   (ङ) **सन्दिग्ध भूतकाल–**श्रेय ने पुस्तक पढ़ी होगी।

   (च) **हेतु-हेतुमद् भूतकाल–**वर्षा होती तो अन्न होता।

3. क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि रहा है, उसे **वर्तमान काल** कहते हैं।

   क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य बीते समय

में पूर्ण हो चुका है, उसे **भूतकाल** कहते हैं। इस प्रकार, भूतकाल का अर्थ है—बीता हुआ समय।

क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि कार्य आने वाले समय में होगा, उसे **भविष्यत्काल** कहते हैं। भविष्य का अर्थ होता है—आने वाला समय। आने वाला समय में होने वाली क्रिया भविष्यत्काल क्रिया कहलाती है।

4. भविष्यतकाल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य भविष्यत्काल—भविष्यत्काल के साधारण रूप अर्थात् क्रियाओं के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के निश्चित रूप से सम्पन्न होने का बोध होता है, उसे सामान्यत भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

हम मेला देखने जाएँगे।

(ख) सम्भाव्य भविष्यत्काल—भविष्यत्काल की जिस क्रिया में सम्भावना पाई जाए, उसे सम्भाव्य भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—शायद शाम को वर्षा हो।

(ग) हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल—जब भविष्यत्काल में सम्पन्न होने वाली क्रिया के सम्पन्न होने में कोई कारण निहित हो तो वहाँ हेतु-हेतुमद् भविष्यत्काल होता है; जैसे—आप बुलाओगे तो मैं अवश्य आऊँगा।

5. वर्तमान काल के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं—

(क) सामान्य वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य की वर्तमान में सामान्य प्रवृत्ति या स्थिति का बोध होता है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—भिखारी भीख माँगता है।

(ख) अपूर्ण वर्तमान काल—क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान में चलते रहने का बोध होता है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—भिखारी भीख माँग रहा है।

(ग) सन्दिग्ध वर्तमान काल—वर्तमान की जिस क्रिया के होने में सन्देह का आभास हो, उसे सन्दिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—भिखारी भीख माँग रहा होगा।

15. वाक्य–विचार

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (ii), 3. (iii).

(ख) रिक्त स्थान भरकर पूरे कीजिए–

1. मनोभावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों को **विस्मयादिबोधक** कहते हैं।
2. **रचना** के आधार पर वाक्य सरल, संयुक्त और मिश्रित होते हैं।
3. साधारण वाक्यों में केवल एक **उद्देश्य** तथा एक क्रिया होती है।
4. सन्देहार्थक वाक्य में कार्य के होने में **सन्देह** व्यक्त किया जाता है।
5. जिन वाक्यों में आज्ञा, आदेश, अनुरोध किया गया हो, वे **आज्ञावाचक** कहलाते हैं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. स्वयं करें।
2. जिसमें किसी बात या कार्य के न होने या न करने का भाव प्रकट होता है; जैसे—

   (क) नल में पानी नहीं आ रहा।

   (ख) मैं कुछ न कर सका।
3. **सरल वाक्य**—जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य (कर्त्ता) और एक क्रिया हो, उसे सरल वाक्य कहते हैं; जैसे—

   (क) संयम गेंद से खेलता है।

   (ख) भावना गीत गाती है।

   संयुक्त वाक्य—जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य समुच्चयबोधक (पर, किन्तु, और या आदि) से जुड़ जाते हैं तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं; जैसे—

   (क) वर्षा हो रही थी इसलिए हम समय पर स्कूल नहीं पहुँच सके।

   (ख) उसने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की परन्तु तुम नहीं आए।
4. **इच्छावाचक वाक्य–**इसमें इच्छा, शुभकामना आदि का भाव प्रकट किया जाता है; जैसे—

   (क) आपकी यात्रा मंगलमय हो।

   (ख) भगवान करे, तुम पास हो जाओ।

   आज्ञावाचक वाक्य–इसमें कोई बात या कार्य करने के लिए आज्ञा, प्रार्थना अथवा परामर्श का भाव होता है; जैसे—

   (क) कृपया मेरी बात मान लीजिए।

   (ख) यहाँ बैठ जाओ।
5. जब किसी विषय पर पूर्ण विचार प्रकट करने के लिए कई साधारण वाक्यों को मिलाकर एक वाक्य की रचना की जाए तब ऐसे रचित वाक्य को मिश्रित वाक्य कहते हैं।

16. विराम–चिन्ह

(क) सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i), 3. (i), 4. (i), 5. (iii).

(ख) रिक्त स्थान भरकर पूरे कीजिए–

1. जिस विराम-चिह्न का प्रयोग थोड़ा ठहरने के लिए किया जाता है, उसे **अल्पविराम चिह्न** कहते हैं।
2. जिन विराम-चिह्नों का प्रयोग किसी के द्वारा कहे गए कथन को ज्यों-का-त्यों उतारने के लिए होता है, उन्हें **उद्धरण** चिह्न कहते हैं।
3. (!) चिह्न को **विस्मयसूचक** कहते हैं।
4. योजक चिह्न का प्रयोग युग्म अथवा **शब्दों** को दोहराने में किया जाता है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए–

1. विराम का अर्थ—रुकना, विराम करना तथा ठहरना होता है। भाषा को बोलते या लिखते समय, भावों के अनुसार विराम लेने के लिए या अपनी बात पर बल देने के लिए विशेष

चिह्न निश्चित किए गए हैं। ये चिह्न ही विराम-चिह्न कहलाते हैं।

2. **अल्पविराम (,)**—वाक्य के बीच में जहाँ थोड़ा रुकना आवश्यक हो, वहाँ अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—यह सुन्दर इमारता, जो तुम देख रहे हो, ऐतिहासिक ताजमहल है।

   अर्धविराम (;)—जब दो वाक्यों के बीच में अल्प विराम लगाने से अर्थ में भ्रांति की सम्भावना हो तब वहाँ अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—वे नेताओं के भाषण सुनने में व्यस्त हैं; भला जल्दी कैसे आ सकते हैं।

3. विराम का अर्थ—रुकना, विराम करना तथा ठहरना होता है। भाषा को बोलते या लिखते समय, भावों के अनुसार विराम लेने के लिए या अपनी बात पर बल देने के लिए विशेष चिह्न निश्चित किए गए हैं। ये चिह्न ही विराम-चिह्न कहलाते हैं।
   - पूर्ण विराम-चिह्न (।)
   - अल्पविराम (,)
   - विस्मयसूचक चिह्न (!)
   - अर्धविराम (;)
   - प्रश्नवाचक वाक्य (?)
   - विवरण चिह्न (—)
   - उद्धरण चिह्नों' ('........' ''........'')
   - योजक चिह्न (-)
   - निर्देशक चिह्न (—)
4. किसी विषय अथवा बात को उदाहरण या विवरण द्वारा समझने के लिए 'विवरण चिह्न' का प्रयोग किया जाता है।
5. **योजक चिह्न**—'योजक चिह्न' का प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने (युग्म), शब्दों को दोहराने और तुलना करने के लिए किया जाता है; जैसे—पाप-पुण्य, माता-पिता, धीरे-धीरे, एकलव्य-सा आदि।

   निर्देशक चिह्न—इसका प्रयोग कथन, उद्धरण अथवा व्याख्या के लिए किया जाता है; जैसे—
   - महात्माजी ने कहा—सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।
   - दुकानदार ने सूची पढ़ी—चीनी, चावल, आटा, दाल और साबुन।

17. अव्यय (अविकारी शब्द)

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (ii), 3. (ii), 4. (i), 5. (iii).

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. ऐसे अविकारी शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, **क्रियाविशेषण** कहलाते हैं।
2. **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण–**जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के परिमाण (मात्रा) का पता चलता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

   (क) समझदार लोग कम बोलते हैं।

   (ख) रोहित ने जरा-सा खाना खाया।

   यहाँ 'कम', और 'जरा-सा' परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं। ये शब्द 'बोलो', 'काम करो' और 'खाया' क्रियाओं के परिमाण का बोध कराते हैं।
3. जो शब्द मन के भावों विस्मय (आश्चर्य), शोक, घृणा, प्रशंसा, प्रसन्नता आदि को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक शब्द कहते हैं; जैसे—

   शाबाश! परीक्षा में क्या अंक पाए हैं?

   हाय! मलेरिया से कितने परिवार उजड़ गए?
4. जो शब्द दो शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक कहते हैं। समुच्चयबोधक के निम्नलिखित दो भेद होते हैं—समानाधिकरण समुच्चयबोधक, तथा व्याधिकरण समुच्चयबोधक।
5. **व्याधिकरण समुच्चयबोधक**—ये एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्यों को प्रधान वाक्य से जोड़ते हैं; जैसे—

   आचार्य जी कहते हैं कि ईश्वर एक है।

   यद्यपि आदित्य अभी बच्चों है तथापित बहुत चतुर है।

19. लिखित अभिव्यक्ति

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

स्वयं करें।

(ख) निम्न पर विज्ञापन बनाइए–

स्वयं करें।

20. शब्द-भण्डार

(क) दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (ii), 3. (iii), 4. (ii).

(ख) रिक्त स्थान भरकर पूरे कीजिए–

1. पक्षी अपने **नीड़** में बैठे हैं।
2. तुलसी में 'रामचरितमानस' **अवधी** भाषा में लिखी।
3. सुदामा **दीन** ब्राह्मण थे।
4. पानी पीकर वह पार्क की **ओर** चला गया।
5. विक्रान्त परिश्रम करो **अन्यथा** फेल हो जाओगे।
6. मैं मन्दिर से **प्रसाद** लेकर आया।

21. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

(क) दिए गए उत्तरों में से सही विकल्प पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (ii), 3. (ii).

(ख) निम्नलिखित लोकोक्तियों को उनके अर्थ से मिलाइए–

1. (iv)
2. (ii)

3. (v)
4. (i)
5. (iii)

21. पत्र-लेखन

स्वयं करें।

22. अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

स्वयं करें।

23. कहानी लेखन

स्वयं करें।

24. अनुच्छेद-लेखन

स्वयं करें।

25. निबंध-लेखन

स्वयं करें।

आदर्श प्रश्न-पत्र-I

1. **सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए-**

(क) (ii), (ख) (i), (ग) (i), (घ) (ii).

2. **सही शब्दों से रिक्त स्थान भरिए-**

(क) ऐसे सर्वनाम शब्द जो बोलने वाला **अपने लिए** प्रयोग में लाता है, उत्तम पुरुष सर्वनाम कहलाते हैं।

(ख) जिस सर्वनाम शब्द का वाक्य के दूसरे सर्वनाम शब्द से **सम्बन्ध** स्थापित किया जाए, उसे **सम्बन्धवाचक** कहते हैं।

(ग) जो सर्वनाम शब्द सुनने वाले के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें **अन्य** कहते हैं।

(घ) एक दर्जन में **बारह** वस्तुएँ होती हैं।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

(क) वे शब्दांश जो मूल शब्द से पहले जुड़कर उस शब्द का अर्थ बदल दे या उसके अर्थ में विशेषण उत्पन्न कर दे, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।

(ख) **कर्मधारय समास**—जिस समास का पूर्वपद विशेषण तथा उत्तरपद विशेष्य हो, कर्मधारय समास कहलाता है। इसमें उत्तरपद प्रधान होता है; जैसे—

समस्तपद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास-विग्रह
हरीमिर्च	हरी	मिर्च	हरी है जो मिर्च
मृगनयनी	मृग	नयनी	मृग के समान नेत्रों वाली

बहुव्रीहि समास—जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता बल्कि कोई अन्य पद प्रधान होता है, बहुव्रीहि समास कहलाता है; जैसे—

समस्तपद	पूर्वपद	उत्तरपद	समास-विग्रह
नीलकंठ	नील	कंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
लंबोदर	लंबा	उदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश

(ग) **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—जिस संज्ञा से किसी व्यक्ति विशेष, स्थान विशेष और वस्तु विशेष का बोध हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सोहन, सुनिता, चेतक, हिमालय, गंगा आदि।

यहाँ सोहन व सुनिता—व्यक्ति का नाम, चेतक—घोड़े का नाम, हिमालय—पर्वत का नाम तथा गंगा—नदी का नाम है।

(घ) **समास के भेद**—1. तत्पुरुष समास, 2. द्वंद्व समास, 3. द्विगु समास, 4. कर्मधारय समास, 5. बहुव्रीहि समास, 6. अव्ययीभाव समास।

4. **निम्नलिखित शब्दों से बनने वाले विशेषण लिखिए-**

स्वयं करें।

आदर्श प्रश्न-पत्र-II

1. **सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए-**

(क) (iii), (ख) (iii), (ग) (iii), (घ) (ii), (ङ) (i).

2. **सही शब्दों से रिक्त स्थान भरिए-**

(क) **रचना** के आधार पर वाक्य सरल, संयुक्त और मिश्रित होते हैं।

(ख) मनोभावों को व्यक्त करने वाले वाक्यों को **विस्मयादिबोधक** कहते हैं।

(ग) जिन विराम-चिह्नों का प्रयोग किसी के द्वारा कहे गए कथन को ज्यों-का-त्यों उतारने के लिए होता है, उन्हें **उद्धरण चिह्न** चिह्न कहते हैं।

(घ) (!) चिह्न को **विस्मयसूचक** कहते हैं।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

(क) **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण-**जिन क्रियाविशेषण शब्दों से क्रिया के परिमाण (मात्रा) का पता चलता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

(क) समझदार लोग कम बोलते हैं।

(ख) रोहित ने जरा-सा खाना खाया।

यहाँ 'कम', और 'जरा-सा' परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं। ये शब्द 'बोलो', 'काम करो' और 'खाया' क्रियाओं के परिमाण का बोध कराते हैं।

(ख) ऐसे अविकारी शब्द जो क्रिया की विशेषता बताते हैं, **क्रियाविशेषण** कहलाते हैं।

(ग) विराम का अर्थ—रुकना, विराम करना तथा ठहरना होता है। भाषा को बोलते या लिखते समय, भावों के अनुसार विराम लेने के लिए या अपनी बात पर बल देने के लिए विशेष चिह्न निश्चित किए गए हैं। ये चिह्न ही विराम-चिह्न कहलाते हैं।

- ✤ पूर्ण विराम-चिह्न (।)
- ✤ अल्पविराम (,)
- ✤ विस्मयसूचक चिह्न (!)
- ✤ अर्धविराम (;)
- ✤ प्रश्नवाचक वाक्य (?)
- ✤ विवरण चिह्न (—)
- ✤ उद्धरण चिह्नों' ('........' ''........'')
- ✤ योजक चिह्न (-)
- ✤ निर्देशक चिह्न (—)

(घ) **योजक चिह्न**—'योजक चिह्न' का प्रयोग दो शब्दों को जोड़ने (युग्म), शब्दों को दोहराने और तुलना करने के लिए किया जाता है; जैसे—पाप-पुण्य, माता-पिता, धीरे-धीरे, एकलव्य-सा आदि।

निर्देशक चिह्न—इसका प्रयोग कथन, उद्धरण अथवा व्याख्या के लिए किया जाता है; जैसे—

- ✤ महात्माजी ने कहा—सत्य के मार्ग पर चलना चाहिए।
- ✤ दुकानदार ने सूची पढ़ी—चीनी, चावल, आटा, दाल और साबुन।

(ङ) किसी विषय अथवा बात को उदाहरण या विवरण द्वारा समझने के लिए 'विवरण चिह्न' का प्रयोग किया जाता है।

4. निम्नलिखित वाक्यों में से कर्म छाँटकर लिखिए–

(क) बच्चों ने सुन्दर गीत गाया।

(ख) नवीन ने मुझे एलबम दिखाया।

(ग) मैंने अपना गृह-कार्य पूरा कर लिया है।

(घ) नानी बच्चों को कहानी सुनाती है।

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (ii), 3. (i), 4. (ii), 5. (iii).

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. बोली भाषा का **क्षेत्रीय** रूपी है।
2. भारतीय संविधान में **22** भाषाओं को मान्यता दी गई है।
3. **हिंदी** भारत की राष्ट्र-भाषा है।
4. हिंदी दिवस **14 सितंबर** को मनाया जाता है।
5. भाषा **वर्णों** का समूह है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. भाषा की ध्वनियों को प्रकट करने के लिए जिन लिखित चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें लिपि कहते हैं।

भाषा	लिपि
हिंदी/संस्कृत	देवनागरी
अंग्रेजी	रोमन
पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फारसी

2. व्याकरण वह शास्त्र है जिससे भाषा को शुद्ध बोलने, लिखने और पढ़ने का ज्ञान प्राप्त होता है।
3. भाषा सार्थक ध्वनियों का वह समूह है जिसके द्वारा हम अपने मन के भावों और विचारों को दूसरों के सामने प्रकट कर सकते हैं तथा किसी अन्य के भावों एवं विचारों को स्वयं समझ सकते हैं।
3. भाषा के जिस रूप से मन के भावों और विचारों को हम लिखकर अन्य व्यक्तियों तक पहुँचाते हैं तथा वे उनको पढ़कर समझते हैं, उसे **लिखित भाषा** कहते हैं। जो पुस्तकें हम पढ़ते हैं वे भाषा का लिखित रूप में हैं। परीक्षा में प्रश्न-पत्र हल करने में, समाचार-पत्र पढ़ने में या पत्र लिखने में हमें लिखित भाषा का ही प्रयोग करना पड़ता है।
4. पूरे विश्व में सभी देशों की अपनी-अपनी भाषा होती है। इन सभी भाषाओं में अंग्रेजी, हिंदी, अरबी, चीनी, जापानी, पुर्तगाली, रूसी, स्पेनिश, फ्रांसी आदि प्रमुख हैं। विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या द्वारा बोली जाने वाली भाषा अंग्रेजी है तथा इसे ही अंतर्राष्ट्रीय भाषा की मान्यता प्राप्त है।

   हिंदी भारत की **राष्ट्रभाषा** है। भाषा में तो इसका प्रयोग होता ही है साथ ही संसार के प्रत्येक देश में हिंदी भाषा-भाषी लोग मिल जाते हैं। इस प्रकार हिंदी का प्रयोग अंग्रेजी के पश्चात् सर्वाधिक लोगों द्वारा किया जाता है।
5. हर क्षेत्र की अपनी एक भाषा होती है, जिन्हें हम बोली कहते हैं।

   नेपाली, पंजाबी, गुजराती, बांग्ला।

2. वर्ण-विचार

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i), 3. (iii), 4. (i).

(ख) उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. हिन्दी में अं, अः, को **अयोगवाह** कहा जाता है।
2. श, ष,स, ह **संघर्षी** व्यंजन हैं।
3. य, र, ल, व **अद्र्धस्वर** व्यंजन हैं।
4. क्ष, त्र, त्र, श्र को **संयुक्त** व्यंजन कहा जाता है।
5. ऑ **दीर्घ** ध्वनि है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. जब भी कुछ बोलने का प्रयास करते हैं तो हमारे कंठ में एक कंपन उत्पन्न हो जाता है। इस कंपन के द्वारा ही हमारे मुख से भिन्न-भिन्न ध्वनियाँ निकलती हैं। इन ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं। वर्ण किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है; जैसे—अ, क, स, ट, भ, ह आदि। वर्ण के दो भेद है—स्वर, व्यंजन।
2. उच्चारण विधि के आधार पर व्यंजन के आठ भेद हैं—

   (क) स्पर्शी व्यंजन, (ख) स्पर्शी-संघर्षी व्यंजन,
   (ग) नासिक्य व्यंजन, (घ) पार्श्विक व्यंजन,
   (ङ) प्रकंपिक व्यंजन, (च) उत्क्षिप्त व्यंजन,
   (छ) संघर्षी व्यंजन, (ज) अद्र्धस्वर व्यंजन।
3. जिन वर्णों का उच्चारण स्वतंत्र रूप से और बिना किसी रुकावट के होता है, उन्हें स्वर कहते हैं, इनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण की सहायता नहीं ली जाती। स्वरों के तीन भेद किए जाते हैं—

   (i) ह्रस्व स्वर, (ii) दीर्घ स्वर, (iii) प्लुत स्वर।
4. जिन वर्णों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं।
5. **संयुक्त व्यंजन–**ये दो व्यंजनों के संयोग से बनते हैं। ये स्वतंत्र व्यंजन नहीं हैं। ये चार हैं—क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

   क्ष—(क् + ष)
   त्र—(त् + र)
   ज्ञ—(ज् + ञ)
   श्र—(श् + र)

   द्वित्व व्यंजन–जब दो समान व्यंजनों का प्रयोग एक साथ होता है, तो उसे द्वित्व व्यंजन कहते हैं। उदाहरण—

   क् + क = क्क — पक्का
   च् + च = च्च — बच्चा
   ज् + ज = ज्ज — लज्जा
   ल् + ल = ल्ल — दिल्ली।

3. संधि

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (ii), 4. (iii), 5. (iii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. व्यंजन का व्यंजन अथवा स्वर से मेल होने पर जो विकार (परिवर्तन) होता है, उसे व्यंजन संधि कहते हैं; जैसे—

वाक्	+	ईश	=	वागीश
सत्	+	आचरण	=	सदाचरण
सत	+	जन	=	सज्जन
तत्	+	अनुसार	=	तदनुसार

2. संधि के तीन भेद होते है—स्वर संधि, व्यंजन संधि, विसर्ग संधि।
3. संधि युक्त शब्दों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया को **संधि-विच्छेद** कहा जाता है।
4. **विसर्ग (:)** के बाद स्वर या व्यंजन आने पर जो परिवर्तन आता है, उसे **विसर्ग संधि** कहते हैं; जैसे—
   - ✤ विसर्ग का 'ओ' हो जाना
     मन: + रथ = मनोरथ
   - ✤ विसर्ग का 'र्' हो जाना
     पुन: + जन्म = पुनर्जन्म
5. जब दो वर्ण (ध्वनियाँ) पास-पास आती हैं तब उनके मेल से जो परिवर्तन या विकार होता है, उसे **संधि** कहते हैं।

   संधि करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि दो पदों के मेल से कोई सार्थक शब्द ही बने।

4. शब्द-विचार

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (iii), 4. (i), 5. (iii).

(ख) निम्नलिखित में अंतर स्पष्ट कीजिए–

1. **रूढ़ शब्द**—ये वे शब्द हैं जिनका परंपरागत रूप से हिंदी भाषा में प्रयोग किया जाता है और इनके खंड नहीं किए जा सकते हैं। स्वतंत्र रूप में इनका कोई एक निश्चित अर्थ होता है जो शब्दों का किसी विशेष अर्थ के लिए प्रयोग किए जाता है तथा इनके टुकड़े करने पर कोई भी अर्थ न निकलता हो, रूढ़ शब्द कहलाते है; जैसे—घर, सड़क, देश, कुर्सी आदि।

   यौगिक शब्द—दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग से बने शब्द **यौगिक शब्द** कहलाते है; जैसे—

   पुस्तकालय = पुस्तक +आलय

   विद्यार्थी = विद्या + अर्थी
2. **तत्सम शब्द**—संस्कृत भाषा के जो शब्द मूल रूप में हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं, **तत्सम शब्द** कहलाते हैं। जैसे—दुग्ध, आम्र, रात्रि, अग्नि।

   तद्भव शब्द—संस्कृत के वे शब्द जो थोड़े बदलाव के साथ हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं, **तद्भव शब्द** कहलाते हैं; जैसे—दूध, आम, रात आग।
3. स्वयं करें।
4. स्वयं करें।
5. **देशज शब्द**–'देश + ज' अर्थात् देश में 'उत्पन्न'। ये शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में आ गए हैं; जैसे—खिड़की, धोती, झुग्गी, पगड़ी, खिड़की आदि।

   विदेशी शब्द—ये शब्द विदेशी भाषाओं से हिंदी में आ गए हैं। ये शब्द मूल रूप में ही हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं; जैसे—

   अंग्रेजी—इंजन, एक्सप्रे, कार, कॉलोनी, डॉक्टर, लॉटरी, सर्कस, बैंक, टेलीफोन, सूट आदि।

   अरबी—अदालत, इस्तीफा, कसम, जुर्माना, ताकत, मुहावरा, वकील, मरीज आदि।

   पुर्तगाली—आलपिन, अलमारी, कप्तान, कमरा आदि।

   तुर्की—तोप लाश, चाकू, कैंची, कुली आदि।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वर्णों के मेल से **शब्द** बनते हैं। शब्दों का प्रयोग वाक्यों में किया जाता है, तब ये शब्द पद का रूप ले लेते हैं।
2. **तत्सम शब्द**—संस्कृत भाषा के जो शब्द मूल रूप में हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे—दुग्ध, आम्र, रात्रि, अग्नि।

   तद्भव शब्द—संस्कृत के वे शब्द जो थोड़े बदलाव के साथ हिंदी में प्रयुक्त हो रहे हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं; जैसे—दूध, आम, रात आग।
3. **यौगिक शब्द**—दो या दो से अधिक शब्दों के संयोग से बने शब्द यौगिक शब्द कहलाते है; जैसे—

   पुस्तकालय = पुस्तक + आलय

   विद्यार्थी = विद्या + अर्थी

   योगरूढ़—जो शब्द यौगिक होते हुए भी सामान्य अर्थ को प्रकट न करके, रूढ़ शब्दों के समान ही किन्हीं विशेष अर्थों को दर्शाते हों, **योगरूढ़** कहलाते हैं; जैसे—रत्नाकर—रत्न + आकार (समुद्र)। कुछ अन्य उदाहरण—

   नीलकंठ = नीले कंठ वाला = शिव

   घनश्याम = घन के समान काला = कृष्ण

   वीणावादिनी = वीणा को बजाने वाली = सरस्वती
4. रचना के आधार पर शब्दों को तीन वर्गों में बाँटा गया है—(क) रूढ़ शब्द, (ख) यौगिक शब्द, (ग) योगरूढ़।
5. अनेक शब्दों के सार्थक समूह को शब्द कहते हैं।

5. शब्द भण्डार

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (ii), 4. (iii), 5. (i).

6. उपसर्ग

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (iii), 3. (ii), 4. (iii).

7. उपसर्ग

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (ii), 3. (i), 4. (ii), 5. (ii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. उपसर्गों की भाँति ही कुछ शब्दांश किसी मूल शब्द के अंत में जुड़कर शब्द को एक नया अर्थ प्रदान करते हैं। शब्द के अंत में जुड़ने वाले शब्दांश को **प्रत्यय** कहते हैं। उपसर्ग के समान प्रत्यय का भी कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता है। अत: इनका भाषा में स्वतंत्र प्रयोग नहीं जाता है।

ई	हँस + ई	हँसी
	बोल + ई	बोली
आप	मिल + आप	मिलाप

2. धातु (क्रिया) के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करने वाले प्रत्यय **कृत प्रत्यय** कहलाते हैं। उदाहरण—

ई	हँस + ई	हँसी
	बोल + ई	बोली
आप	मिल + आप	मिलाप

वे प्रत्यय जो धातु से भिन्न किसी शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें **तद्धित प्रत्यय** कहते हैं; जैसे—नौकर → नैकरानी।

8. समास

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (ii), 4. (i), 5. (iii)

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. समास की प्रक्रिया के बाद जो शब्द बनते हैं, उन्हें **सामाजिक शब्द** कहते हैं।
2. **कर्मधारय** समास के दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है।
3. समास का अर्थ **मेल** हैं।
4. **द्विगु** समास का प्रथम पद संख्यावाची होता है।
5. समास के लिए कम-से-कम दो या दो से अधिक शब्दों का मेल आवश्यक है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. स्वयं करें।
2. परस्पर संबंध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

देश के लिए भक्ति = देशभक्ति

राजा का भवन = राजभवन

घोड़े पर सवार = घुड़सवार

वन का छोटा रूप = उपवन

रसोई के लिए घर = रसोईघर

3. **कर्मधारय समास** के दोनों पदों के बीच विशेषण-विशेष्य या उपमेय-उपमान का संबंध होता है; जैसे—पीतांबर—पीत (पीला) है जो अंबर (वस्त्र)। इस समास में अंबर (वस्त्र) का विशेषण पीत (पीला) है। अत: यह कर्मधारय समास है।

बहुव्रीहि समास के सामाजिक पद मिलकर ही किसी अन्य संज्ञा के लिए विशेषण का कार्य करते हैं; जैसे—पीतांबर—पीत (पीले) हैं अंबर (वस्त्र) जिसके अर्थात् श्रीकृष्ण।

4. जिस सामाजिक शब्द का उत्तर पद प्रधान होता है, उसे **तत्पुरुष समास** कहते हैं।

इस सामाजिक पदों में दोनों पदों के बीच आने वाले परसर्गों 'के द्वारा, का, के, की, में' आदि का लोप हो जाता है; जैसे—

गगन चुंबी	गगन को चूमने वाला
कहानीकार	कहानी को लिखने वाला

कर्म तत्पुरुष–इसमें कर्मकारक के परसर्ग 'को' का लोप हो जाता है; जैसे—

यशप्राप्त	यश को प्राप्त
सर्वप्रिय	सर्व (सबका) प्रिय

करण तत्पुरुष–इन में करण कारक की विभिक्ति 'से' तथा 'द्वारा' का लोप हो गया है।

शक्तिपूर्ण	शक्ति से पूर्ण
मनचाहा	मन से चाहा

संप्रदान तत्पुरुष–इसमें संप्रदान कार के परसर्ग 'से' तथा 'के द्वारा' का हो जाता है।

देशप्रेम	देश के प्रेम
डाकगाड़ी	डाक के लिए गाड़ी

अपादान तत्पुरुष–इसमें अपादान कारक के परसग 'से' (अलग होने के अर्थ में) लोप होता है; जैसे—

सुखविहीन	सुख से विहीन
बंधनमुक्त	बंधन से मुक्त

संबंध तत्पुरुष–इसमें संबंध कारक के परसग्र 'का', 'की' 'के' का लोप होता है; जैसे—

भारतरत्न	भारत का रत्न
प्रकृतिप्रेमी	प्रकृति का प्रेमी

अधिकरण तत्पुरुष–इसमें अधिकरण कारक के परसर्गों 'में' तथा 'पर' का लोप होता है; जैसे—

रथयात्री	रथ पर सवार
शरणागत	शरण में आगत

5. समास के छः भेद होते हैं—1. अव्ययीभाव समास, 2. तत्पुरुरुष समास, 3. कर्मधारय समास, 4. द्विगु समास, 5. द्वंद्व समास, 6. बहुव्रीहि समास।

अव्ययीभाव समास–जिस सामासिक शब्द का पहला पद अव्यय और प्रधान हो उसे अव्ययी भाव समास कहते हैं; जैसे—

निस्संदेह	संदेह के बिना
आमरण	मरने तक

तत्पुरुष समास–जिस सामाजिक शब्द का उत्तर पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।

गगन चुंबी	गगन को चूमने वाला
कहानीकार	कहानी को लिखने वाला

कर्मधारय समास–जिस सामाजिक पद का पूर्व पद 'विशेषण' व उत्तर पद 'विशेष्य' होता है तथा उनमें उपमेय-उपमान का संबंध हो, वहाँ कर्मधारय समास होता है; जैसे—

लालकिला	लाल है जो किला
महादेव	महान है जो देव

द्विगु समास–जिन सामाजिक शब्दों का पहला पद संख्यावाचक हो वहाँ, द्विगु समास होता है; जैसे—

सप्तर्षि	सात ऋषियों का समूह
दोपहर	दो पहरों का समूह

द्वंद्वं समास–जिन सामाजिक शब्दों के दोनों पद प्रधान हों, और जिन्हें विग्रह करने पर 'और', 'या', 'अथवा', 'एवं' आदि समुच्चयबोधकों का प्रयोग होता हो, द्वंद्व समास कहलाते हैं। इन सामाजिक शब्दों को लिखने के लिए दोनों पदों को योजक चिह्न (-) से जोड़ा जाता है; जैसे—

पाप-पुण्य	पाप या पुण्य
दादा-दादी	दादा और दादी

बहुव्रीहि समास–जिन सामाजिक शब्दों के दोनों पद गौण हों और दोनों पद मिलकर किसी अन्य पद की ओर संकेत करते हों, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है; जैसे—

चक्रधर	चक्र धारण करने वाला अर्थात विष्णु
लंबोदर	लंबा है उदर जिसका अर्थात गणेश

9. संज्ञा

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (i), 4. (i), 5. (ii)

(ख) उचित भाववाचक संज्ञाओं द्वारा रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. चोर **चोरी** के इरादे से घर में घुस गया।
2. रमेश के घर की **ऊँचाई** देखते ही बनती है।
3. बहुत अधिक चलने से मैं **थकावट** महसूस कर रहा हूँ।
4. वह युद्ध में **साहस** के साथ लड़ा।
5. वर्षा काल में चारों ओर **हरियाली** छा जाती है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा**—किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु अाविा स्थान के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

   जातिवाचक संज्ञा—जो शब्द किसी प्राणी, वस्तु, या स्थान की पूरी जाति का बोध कराते हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।
2. जिस शब्द से किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी अथवा स्थान के नाम का पता चलता है; उसे संज्ञा कहते हैं; जैसे—मेरठ, आगरा, मेज, क्रोध आदि।
   - ✤ व्यक्तिवाचक संज्ञा
   - ✤ जातिवाचक संज्ञा
   - ✤ भाववाचक संज्ञा
3. संज्ञा शब्द जिनसे एक ही जाति के किसी समूह या समुदाय का पता चलता है, उन्हें समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।
4. कुछ संज्ञाएँ मूल रूप से ही भाववाचक संज्ञाएँ होती हैं; जैसे—सतय, हिंसा, अहिंसा, न्याय, सुख, दु:ख, दया कृपा आदि।

   कुछ भाववाचक संज्ञाएँ मूल शब्दों में प्रत्येक जोड़कर बनाई जाती हैं, इन्हें व्युत्पन्न भाववाचक संज्ञाएँ कहते हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं—

जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाना

जातिवाचक	भाववाचक
भक्ति	भक्ति
शिशु	शैशव

सर्वनाम से भाववाचक संज्ञा बनाना

सर्वनाम	भाववाचक
आप	आपा
सर्व	सर्वस्व

विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाना

विशेषण	भाववाचक
लाल	लालिमा
पीला	पीलापन

क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाना

क्रिया	भाववाचक
चुनना	चुनाव
हँसना	हँसी

अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

अव्यय	भाववाचक
समीप	समीपता
दूर	दूरी

10. सर्वनाम

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (iii), 3. (iii), 4. (i), 5. (ii)

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त सर्वनाम से कीजिए–

1. बाहर **कौन** चिल्ला रहा है?
2. **वह** कब आए?
3. मुझे खाने को **अपने-आप** महसूस कर रहा हूँ।
4. यह काम मैं **स्वयं** कर लूँगा।
5. महात्मा गाँधी **हमारे** राष्ट्रपिता हैं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग होता हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

   अंगुलिमाल एक खूँकार डाकू था। **वह** प्रसेनजित के राज्य में रहता था। **उसने** हजारों आदमियों को मारने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। **उसके** गले में अँगुलियों की माला पड़ी रहती थी। सभी लोग **उससे** त्रस्त रहते थे।

2. सर्वनाम के छः भेद होते हैं—

   पुरुषवाचक सर्वनाम–मैं, तुम, वह, तू, वे आदि।

   निश्चयवाचक सर्वनाम–ये मेरे मित्र हैं।

   अनिश्चयवाचक सर्वनाम–रीना कहीं चली गई है।

   प्रश्नवाचक सर्वनाम–सुरेश कहाँ रहता है?

   संबंधवाचक सर्वनाम–जो सोता है वहीं खोता है।

   निजवाचक सर्वनाम–मैं स्वयं चला जाऊँगा।

3. पुरुचवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित तीन उपभेद हैं—

   (क) उत्तम पुरुष–जिन सर्वनाम शब्दों का किसी कर्त्ता द्वारा स्वयं के लिए प्रयोग किया जाता है, वे उत्तम पुरुष कहलाते हैं; जैसे—मैं, हम, मैंने, हमें, हमने आदि।

   (ख) मध्यम पुरुष–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग बोलने वाला सुनने वाले वाले के लिए करता है। उन्हें मध्यम पुरुष कहते हैं; जैसे—तू, तुम, तुम्हारा, आप, आपको, आपने आदि।

   (ग) अन्य पुरुष–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वार्तालाप करते समय किसी अन्य व्यक्ति के स्थान पर किया जाता है, उन्हें अन्य पुरुष कहते हैं; जैसे—यह, वह, वे, ये, इन्हें, उन्हें, उसने, इन्होंने आदि।

4. **निश्चयवाचक सर्वनाम–**जो सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु, अथवा स्थान की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करें, उन्हें निश्चतवाचक सर्वनाम कहते हैं।

   अनिश्चयवाचक सर्वनाम–जो सर्वनाम किसी निश्चित व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थान का बोध नहीं कराते, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

11. लिंग

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii)

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जो शब्द स्वयं के पुरुष जाति के होने का ज्ञान कराते हैं, **पुल्लिंग** कहलाता हैं; जैसे—

   घोड़ा दौड़ रहा है। **बालक** पढ़ रहा है।

2. शब्द के जिस रूप से उसके पुरुष या स्त्री जाति का बोध हो, उसे **लिंग** कहते हैं।

   लिंग के दो भेद होते हैं—(i) पुल्लिंग, (ii) स्त्रीलिंग।

3. स्वयं करें।
4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी वस्तु या प्राणी के स्त्री जाति के होने का बोध हो, वे शब्द 'स्त्रीलिंग'कहलाते हैं; जैसे—**बंदरिया, बिल्ली, गाय, लड़की, रजाई, धोती, चटाई** आदि।

12. वचन

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (iii), 4. (i)

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. हिंदी में वचन के दो भेद हैं—(i) एकवचन, (ii) बहुवचन।
2. शब्द के जिस रूप से उसके एक या अनेक होने का बोध होता है, उसे **वचन** कहते हैं।

   बच्चा स्कूल जा रहा है।

3. स्वयं करें।
4. स्वयं करें।

13. कारक

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (ii), 3. (iii), 4. (i)

(ख) निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति उचित कारक-चिह्नों द्वारा कीजिए–

1. रमेश **ने** मोहन **को** समझाया।
2. राम **ने** रवि **को** सौ रुपये माँगे।
3. नेता जी **ने** बहुत लंबा भाषण दिया गया।

4. **अरे** रमेश! तुम तो बहुत समझदार निकले।
5. पेड़ **से** फल गिरते हैं।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **करण कारक–**क्रिया के करने के साधन को कारण कार कहा जाता है। इसका परसर्ग 'से' है; जैसे—

   बच्चों **खिलौने से** खेल रहा है।

   हम **बस से** स्कूल जाते हैं।

   पहले वाक्य में 'खिलौने से' तथा दूसरे वाक्य में 'बस से' क्रमश: खेलने तथा जाने का काम हो रहा है। यहाँ 'से' परसर्ग का प्रयोग हुआ है अत: करण कारक है।

   अपादान कारक–जिससे अलग होने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से' है; जैसे—

   पत्ता **पेड़ से** गिरता है।

   गंगा **हिमालय से** निकलती है।

2. **कर्म कारक–**वाक्य में जिस संज्ञा/सर्वनाम पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं; इसका परसर्ग 'को' है। कभी-कभी परसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

   सिपाही ने **चोर को** पकड़ा।

   वह **पानी** पी रहा है।

   पहले वाक्य में 'पकड़ना' क्रिया का फल 'चोर' पर पड़ रहा है अत: 'चोर' कर्म कारक है और 'को' परसर्ग (कारक-चिह्न) है। दूसरे वाक्य में 'पानी' कर्म के साथ कोई कारक चिह्न नहीं है।

   संप्रदान कारक–जिसके लिए कोई कार्य क्रिया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसके परसर्ग हैं—को, के लिए जैसे—

   गरीबों को भोजन दो।

   मैं **पिताजी के लिए** दवा लाया हूँ।

   इन वाक्यों में 'गरीबों को' भोजन देने का तथा 'पिताजी के लिए दवा लाने का काम हुआ है।'

3. हम देखते हैं कि वाक्यों में संज्ञाओं का क्रिया से संबंध बताने के लिए कुछ चिह्नों; जैसे—ने, को, के, लिए,से, पर, की, का प्रयोग किया गया है। इन्हें कारक-चिह्न या परसर्ग कहते हैं।

14. विशेषण

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (ii), 4. (iii), 5. (iii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. विशेषण के निम्नलिखित चार भेद हैं—

   (i) गुणवाचक विशेषण—

   मोर के पंख बहुत **सुंदर** हैं।

   यह **सफेद** खरगोश है।

   (ii) परिमाणवाचक विशेषण—

   थोड़ा नाश्ता कर लो।

   एक लीटर दूध दो।

   (iii) संख्यावाचक विशेषण—

   दो बत्तख तैर रही हैं।

   अनेक छात्र दौड़ रहे हैं।

   (iv) सार्वनामिक विशेषण—

   वह घर किसका है?

   कोई बालक खड़ा है।

2. **परिमाणवाचक विशेषण–**संज्ञा की केवल मात्रा, तौल अथवा माप बताते हैं। इन वस्तुओं को गिना नहीं जा सकता है; जैसे—घी, तेल, चावल, दाल, कपड़ा आदि।

   उदाहरण—थोड़ा घी, जरा-सा तेल, दो किलो चावल, चार बोरी दाल, एक मीटर कपड़ा आदि।

   संख्यावाचक विशेषण–उन वस्तुओं की संख्या बताते हैं जिनकी गणना संभव हो अाविा जिन्हें गिना जा सके; जैसे—मेज, कुर्सी, संतरा, केला, आदमी, पक्षी आदि की गणना संभव है।

   उदाहरण—चार मेज, कुछ कुर्सियाँ, पाँच संतरें, एक दर्जन केले, कुछ आदमी आदि।

3. जिन सर्वनामों का प्रयोग संज्ञा के विशेषण के रूप में होता है, उन्हें **सार्वनामिक विशेषण** कहते हैं। इनको संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं; जैसे—

   वह घर किसका है?

   कोई बालक खड़ा है।

4. **मूलावस्था–**इसमें विशेषण की सामान्यत अवस्था का ज्ञान होता है; जैसे—मोहन चतुर व्यक्ति है।

   उत्तमावस्था–इसमें किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान को सबसे अच्छा या सबसे बुरा बताया जाता है; जैसे—वह **सर्वश्रेष्ठ** धावक है।

5. जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या और परिमाण (नाप-तौल) आदि का बोध होता है, उन्हें विशेषण कहते हैं; जैसे—छोटा, बड़ा, सुंदर, स्वच्छ, लाल, पीला, कच्चा, पक्का, तीन मीटर, पाँच लीटर, दो आठ, दस आदि।

15. क्रिया

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (i), 4. (ii), 5. (i).

(ख) रिक्त स्थान भरकर पूरे कीजिए–

1. नौकरानी खाना बनाकर **चली** गई।
2. अध्यापिका पाठ **पढ़** रही है।
3. मैंने प्रश्नोत्तर **लिख** लिए हैं।
4. मैं आज स्कूल **जाऊँगा।**

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जिन शब्दों के माध्यम से किसी काम के करने या होने का बोध हो, उसे क्रिया कहते हैं।

   महेश कक्षा चार में **पड़ता है**।

   रवि आम **खा रहा है**।

   बाहर वर्षा **हो रही है**।

   पक्षी आकाश में **उड़ रहे हैं**।

2. **अकर्मक क्रिया–**अकर्मक अर्थात् 'बिना कर्म के'। जिन क्रियाओं को कर्म की आवश्यकतानहीं होती, उन्हें अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—

   बच्चा रो रहा है।

   पक्षी उड़ रहे हैं।

   सकर्मक क्रिया–सकर्मक का अर्थ है—'कर्म के साथ'। जिन क्रियाओं के साथ कर्म लगा हो और क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—

   माली पौधों को सींच रहा है।

   रवि पत्र लिख रहा है।

16. काल

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (iii), 4. (iii), 5. (ii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **सामान्य वर्तमान काल–**जो क्रिया वर्तमान काल में सामान्य रूप से होती है, उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—

   सुरेश पढ़ता है। सुमिता नाचती है।

   अपूर्ण वर्तमान काल–वाक्य की जिस क्रिया से यह पता चले कि काम वर्तमान काल मेंशुरू होकर अभी चल रहा है अर्थात् पूर्ण नहीं हुआ है, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—मैं बाजार जा रहा हूँ।

   वह खाना खा रहे हैं।

   संदिग्ध वर्तमान काल–जिस क्रिया के वर्तमान काल में पूरा होने के बारे में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं; जैसे—ग्वाला दूध लाता होगा।

   माँ आ रही होगी।

2. **आसन्न भूतकाल–**यदि क्रिया का संपादन कुछ ही समय पूर्व हुआ है तो उस समय को आसन्न भूतकाल कहते हैं; जैसे—रेलगाड़ी अभी-अभी गई हैं।

   बच्चे स्कूल से आए हैं।

   वह फल लाया है।

   उपर्युक्त सभी वाक्यों में क्रिया का संपादन थोड़े समय पूर्व ही हुआ है। इसलिए ये आसन्न भूतकाल की क्रियाएँ हैं। आसन्न भूतकाल क्रियाओं में सामान्य भूतकाल की क्रियाओं के साथ 'है', 'हैं' आदि लगा होता है।

3. **पूर्ण भूतकाल–**यदि क्रिया बहुत समय पहले संपन्न हो चुकी हो तो उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

   बाजार बंद हो चुका था। उसने पानी पी लिया था।

   मैंने यह पुस्तक खरीदी थी।

   उपर्युक्त सभी वाक्यों में क्रिया का संपादन बहुत समय पहले हो चुका है। अत: ये सभी क्रियाएँ 'पूर्ण भूतकाल' हैं। पूर्ण भूतकाल की क्रियाओं के अंत में 'था', 'थी', 'थे' आदि लगा होता है।

   अपूर्ण भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में आरंभ होने और अब तक चलने का बोध हो, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

   वर्षा हो रही था।

   मोर नाच रहा था।

   श्याम पुस्तक पढ़ रही थी।

   अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहे थे।

4. क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का बोध होता है उसे **काल** कहते हैं। काल तीन प्रकार के होते हैं—1. वर्तमान काल, 2. भूतकाल, 3. भविष्य काल।

5. भविष्यत काल के निम्नलिखित दो भेद हैं—

   सामान्य भविष्य काल–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य के समान्य रूप से होने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्य काल कहते हैं; जैसे—

   हम शाम को स्कूल जाएँगे।

   संभाव्य भविष्य काल–क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होन`की संभावना या अनुमान को व्यक्त किया जा रहा हो, तो वहाँ संभाव्य भविष्य काल होता है; जैसे—

   शायद आज वह आ जाए।

17. वाच्य

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि उसके लिंग तथा वचन का प्रयोग कर्ता, कर्म अथवा भाव में से किसके अनुसार किया गया है, उसे **वाक्य** कहते हैं।

2. वाक्य के भेद—(i) कर्तृवाच्य, (ii) कर्मवाच्य, (iii) भाववाच्य

3. **भाववाच्य–**इस प्रकार के वाक्यों में कर्ता और कर्म दोनों अप्रधान होते हैं। क्रिया भाव के अनुसार चलती है। भाववाच्य केवल अकर्मक क्रिया का रूप होता है; जैसे—

   मुझसे चला नहीं जाता।

   यहाँ सोया नहीं जाता।

   लड़की से खड़ा नहीं हुआ जाता।

   मुझसे लड़ाई नहीं की जाती।

4. **कर्मवाच्य–**इस प्रकार के वाक्यों में क्रिया को चलाने वाला कर्म होता है। उसी की प्रधानता होती है। कभी-कभी तो कर्ता का लोप भी हो जाता है; जैसे—

   मुझसे ग्रंथ नहीं लिखा जाता।

   मुझसे किताब नहीं पढ़ी जाती।

   यह उपन्यास प्रेमचंद्र द्वारा लिखा गया है।

   बाहर का दरवाज़ा नहीं खुलता।

5. **कर्तृवाच्य–**इस प्रकार के वाक्यों में क्रिया को करने वाला कर्ता प्रधान होता है और उसी के अनुसार क्रिया चलती है; जैसे—

   महेश सो रहा है।

   रोहित पुस्तक पढ़ रहा है।

   मैंने पानी पी लिया है।

   लड़के आम खाते हैं।

18. अव्यय/अविकारी शब्द

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (i), 4. (i), 5. (i).

(ख) निम्नलिखित वाक्यों के नीचे लिखे अव्ययों में से उपयुक्त अव्यय छाँटकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. बिरला मंदिर **के बाद** हमारा घर आता है।
2. **अब** आप जा सकते हैं।
3. मोहन **धीरे-धीरे** काम करता है।
4. **बाप रे** इतनी बड़ी बिल्ली।
5. मुझे घर पर काम हैं **इसलिए** आज स्कूल नहीं जाऊँगा।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रिया-विशेषण कहते हैं। निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित अंश क्रिया-विशेषण का कार्य कर रहे हैं—हम कल आगरा जाएँगे।

   तुम वहाँ क्या कर रहे हो?

2. क्रिया-विशेषण के भेद—

   रीतिवाचक क्रिया-विशेषण–जो शब्द क्रिया के होने की रीति या विधि बताते हैं, उन्हें रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—घड़ी धीरे-धीरे चलती है।

   स्थानवाचक क्रिया-विशेषण–जो शब्द क्रिया की स्थान संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—वह ऊपर बैठा है।

   कालवाचक क्रिया-विशेषण–जो शब्द क्रिया के काल या समय संबंधी विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—रविदत्त परसों आएगा।

   परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण–जो शब्द क्रिया की मात्रा या परिमाण बताए, उसे परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं; जैसे—कम बोलो।

3. राम और श्याम, नहा-धो लो और सो जाओ।

   स्मृति और मोहिनी आ रही है।

4. जो अव्यय शब्द विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, आदि मनोभावों को व्यक्त करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—

   विस्मय–अरे राम, हे राम, वाह, ऐं, काश।

   हर्ष–वाह-वाह, धन्य-धन्य, शाबास क्या खूब।

   शोक–हाय, ओह, आह, बाप रे, त्राहि-त्राहि।

   घृणा–छिः, छी-छी, हट, अरे, दूर, धिक्।

   ✤ विस्मयादिबोधक शब्द के साथ विस्मयादिबोधक चिह्न (!) अवश्य लगाया जाता है; जैसे—अरे राम!, हाय!

   ✤ ये प्रायः वाक्य के आरंभ में लगाए जाते हैं।

5. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ जोड़ते हैं, वे संबंधबोधक अव्यय कहलाते हैं। इनके पहले किसी-न-किसी परसर्ग की अपेक्षा रहती है। उदाहरण—

   वह घर से दूर पहुँच गया।

   उसकी कोठी के पीछे आम का पेड़ है।

19. वाक्य

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (ii), 4. (i), 5. (ii).

(ख) प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. सार्थक शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिससे अपेक्षित अर्थ प्राप्त होता है, वाक्य कहलाता है। अतः वाक्य की रचना करते समय ध्यान रखना चाहिए कि वाक्य सार्थक होने के साथ-साथ सहज, संक्षिप्त एवं प्रवाहमय हो।

   (i) वे गाय का दूध पीता है।

   (ii) बंदर नाच रहा है।

2. वाक्य के दो अंग होते हैं—1. उद्देश्य, 2. विधेय।

   उद्देश्य–वाक्य में जिसके विषय के कुछ बताया जाता है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं। साधारणतः वाक्य में प्रयुक्त कर्ता ही उद्देश्य होता है।

   विधेय–वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ बताया जाता है, उसे 'विधेय' का है। साधारणतः वाक्य में कर्ता एवं इसके विस्तार के अतिरिक्त सब कुछ विधेय होता है।

3. **अर्थ के आधार पर–**अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद हैं—(i) विधानवाचक, (ii) निषेधवाचक, (iii) प्रश्नवाचक, (iv) आज्ञावाचक, (v) विस्मयादिबोधक, (vi) संदेहवाचक, (vii) इच्छावाचक, (viii) संकेतवाचक।

4. **रचना के आधार पर–**रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं—(i) सरल वाक्य, (ii) संयुक्त वाक्य, (iii) मिश्रित वाक्य।

5. जिन वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या एक से अधिक उपवाक्य उस पर आश्रित हों, वे **मिश्रित वाक्य** कहलाते हैं; जैसे—

मौसम विभाग ने भविष्यवाणी की है। कि आज वर्षा होगी।

प्रधान उपवाक्य **आश्रित उपवाक्य**

20. पद–परिचय

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i).

(ख) पद-परिचय से आप क्या समझते हैं?

वाक्य में प्रयुक्त पदों के बारे में व्याकरणिक जानकारी देना ही **पद-परिचय** कहलाता है।

21. अशुद्ध वर्तनी और वाक्यों को शुद्ध करना

(क) प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. भाषा शब्द 'संस्कृत' की धातु 'भाष्' से बना है। **भाष्** का शाब्दिक अर्थ है—**बोलना**। मुँह से निकली प्रत्येक ध्वनि भाषा नहीं होती बल्कि 'भाषा' सार्थक ध्वनियों का उच्चारण है। भाषा का लिखित और मौखिक स्वरूप व्याकरण के नियमों से बँधा हुआ है। इन नियमों के अनुसार बोली या लिखी हुई भाषा को **मानक भाषा** कहा जाता है। मानक भाषा में केवल शुद्ध वर्तनी और शुद्ध वाक्य को ही मान्य दी जाती है।
2. **वाक्य संबंधी अशुद्धियाँ–**प्राय: देखाजाता है कि वाक्यों में लिंग, वचन, करण, संबंधी त्रुटियाँ पाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त शब्द क्रम संबंधी अशुद्धियाँ, करण, क्रिया और कर्म संबंधी अशुद्धियाँ, पुनरुक्ति और मुहावरे व लोकोक्ति संबंधी अशुद्धि भी पाई जाती हैं। आइए, कुछ उदाहरण देखें—
   - ✤ लिंग संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ वचन संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ कारक संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ संज्ञा संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ सर्वनाम संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ शब्द–क्रम संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ पुनरुक्ति संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ
   - ✤ क्रिया–विशेषण संबंधी अशुद्धियाँ
3. लिपि के मानक चिह्नों को व्याकरण के नियमों के अनुसार क्रमबद्ध रूप से लिखना 'वर्तनी' कहलाता है।

   सामान्यतया भाषा में जो वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ दिखाई देती हैं, वे स्वरों के अनुचित प्रयोग अथवा मिलते–जुलते वर्णों के गलत प्रयोग से आती हैं।
4. साधारणतया स्थानीय भाषाओं के पुट के कारण उच्चारण संबंधी ये अशुद्धियाँ सामने आती हैं—

अशुद्ध उच्चारण	**शुद्ध उच्चारण**
कारन	कारण
उच्चारण	उच्चारण
हस्तपाल	अस्पताल
रिस्का	रिक्शा
कृय	क्रय

22. विराम–चिह्न

(क) निम्नलिखित में पूर्णविराम का कौन-सा चिह्न है?

1. (iii), 2. (i).

(ख) प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **विराम** का अर्थ है—**रुकना** या **ठहरना**। अपने भावों और विचारों को व्यक्त (बोलकर या लिखकर) करते समय हम वाक्य के बीच में कुछ क्षण के लिए रुकते हैं। इसी को 'विराम' कहते हैं। लिखते समय इसे दिखाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं।
2. **अर्धविराम (;)–**वाक्य में जहाँ अल्प विराम से कुछ अधिक और पूर्ण विराम से कुछ कम ठहरना हो, वहाँ अर्धविराम का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

   गाँधीजी नहीं रहे, वे अमर हो गए।

   अल्प विराम (,)–इसका प्रयोग निम्नलिखित स्थितियों में कियाजाता है—
   - ✤ एक ही प्रकार के कई शब्दों का प्रयोग होने पर; जैसे—दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई बड़े शहर हैं।
   - ✤ हाँ, नहीं के बाद—1. हाँ, तुम ठीक कहते हो।, 2. नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता।
   - ✤ तारीख के साथ महीने का नाम लिखने पर—15 अगस्त, 1947
   - ✤ किसी के कथन को उद्धृत करने से पूर्व—तिलक ने कहा, ''स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।''
   - ✤ पत्र में संबोधन के बाद—महोदय, प्रिय मित्र, पूज्य पिताजी।

23. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) निम्नलिखित में पूर्णविराम का कौन-सा चिह्न है?

1. (i), 2. (ii), 2. (i).

(ख) प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. भाषा को रोचक और प्रभावपूर्ण बनाने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

   लोक में प्रचलित उक्ति को ही **लोकोक्ति** कहा जाता है। लोकोक्ति सामाजिक जीवन के अनुभव के आधार पर ही बनती हैं। लोकोक्तियाँ प्राय: पूर्ण वाक्य जैसी होती हैं।

2. स्वयं करें।

24. कहानी–लेखन

स्वयं करें।

25. अनुच्छेद–लेखन

निम्नलिखित विषयों पर अनुच्छेद लिखिए–

स्वयं करें।

26. निबंध–लेखन

स्वयं करें।

27. पत्र–लेखन

स्वयं करें।

28. अपठित बोध

स्वयं करें।

29. चित्र–वर्णन

स्वयं करें।

आदर्श प्रश्न–पत्र–I

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii), (ख) (i), (ग) (iii), (घ) (i).

2. सही शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) बहुत अधिक चलने से मैं **थकावट** महसूस कर रहा हूँ।

(ख) **तुम** कब आए?

(ग) यह काम मैं **स्वयं** कर लूँगा।

(घ) पेड़ **से** फल गिरते हैं।

(ङ) राम **ने** रवि **से** सौ रुपये माँगे।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. **करण कारक–**क्रिया के करने के साधन को कारण कार कहा जाता है। इसका परसर्ग 'से' है; जैसे—

   बच्चों **खिलौने से** खेल रहा है।

   हम **बस से** स्कूल जाते हैं।

   पहले वाक्य में 'खिलौने से' तथा दूसरे वाक्य में 'बस से' क्रमश: खेलने तथा जाने का काम हो रहा है। यहाँ 'से' परसर्ग का प्रयोग हुआ है अत: करण कारक है।

   अपादान कारक–जिससे अलग होने का भाव प्रकट हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसका परसर्ग 'से' है; जैसे—

   पत्ता **पेड़ से** गिलता है।

   गंगा **हिमालय से** निकलती है।

2. **कर्म कारक–**वाक्य में जिस संज्ञा/सर्वनाम पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़े, उसे कर्म कारक कहते हैं; इसका परसर्ग 'को' है। कभी-कभी परसर्ग का प्रयोग नहीं होता।

   सिपाही ने **चोर को** पकड़ा।

   वह **पानी** पी रहा है।

   पहले वाक्य में 'पकड़ना' क्रिया का फल 'चोर' पर पड़ रहा है अत: 'चोर' कर्म कारक है और 'को' परसर्ग (कारक-चिह्न) है। दूसरे वाक्य में 'पानी' कर्म के साथ कोई कारक चिह्न नहीं है।

   संप्रदान कारक–जिसके लिए कोई कार्य क्रिया जाए या जिसे कुछ दिया जाए, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसके परसर्ग हैं—को, के लिए जैसे—

   गरीबों को भोजन दो।

   मैं **पिताजी के लिए** दवा लाया हूँ।

   इन वाक्यों में 'गरीबों को' भोजने देने का तथा 'पिताजी के लिए दवा लाने का काम हुआ है।'

3. हम देखते हैं कि वाक्यों में संज्ञाओं का क्रिया से संबंध बताने के लिए कुछ चिह्नों; जैसे—ने, को, के, लिए, से, पर, की, का प्रयोग किया गया है। इन्हें कारक-चिह्न या परसर्ग कहते हैं।

4. जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या और परिमाण (नाप-तौल) आदि का बोध होता है, उन्हें विशेषण कहते हैं; जैसे—छोटा, बड़ा, सुंदर, स्वच्छ, लाल, पीला, कच्चा, पक्का, तीन मीटर, पाँच लीटर, दो आठ, दस आदि।

5. **उत्तमावस्था–**इसमें किसी व्यक्ति, वस्तु या स्थान को सबसे अच्छा या सबसे बुरा बताया जाता है; जैसे—वह सर्वश्रेष्ठ धावक है।

   मूलावस्था–इसमें विशेषण की सामान्यत अवस्था का ज्ञान होता है; जैसे—मोहन चतुर व्यक्ति है।

4. **निम्नलिखित वाक्यों से विशेषण छाँटकर उनकी अवस्थाएँ लिखिए–**

	विशेषण शब्द	**अवस्था**
(क)	लम्बी	नदी
(ख)	लंबा	सयंम
(ग)	घना	पेड़
(घ)	चार	दिन
(ङ)	सर्वाधिक शक्तिशाली	वह

आदर्श प्रश्न-पत्र-II

1. **सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) (i), (ख) (i), (ग) (i), (घ) (ii), (ङ) (ii).

2. **सही शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–**

(क) मोहन **धीरे-धीरे** काम करता है।

(ख) बिरला मंदिर **के बाद** हमारा घर आता है।

(ग) मुझे घर पर काम हैं **इसलिए** आज स्कूल नहीं जाऊँगा।

(घ) **अरे!** इतनी बड़ी बिल्ली।

(ङ) **अब** आप जा सकते हैं।

3. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) वाक्य के दो अंग होते हैं—1. उद्देश्य, 2. विधेय।

उद्देश्य–वाक्य में जिसके विषय के कुछ बताया जाता है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं। साधारणत: वाक्य में प्रयुक्त कर्ता ही उद्देश्य होता है।

विधेय–वाक्य में उद्देश्य के विषय में जो कुछ बताया जाता है, उसे 'विधेय' का है। साधारणत: वाक्य में कर्ता एवं इसके विस्तार के अतिरिक्त सब कुछ विधेय होता है।

(ख) **विराम** का अर्थ है—**रुकना** या **ठहरना**। अपने भावों और विचारों को व्यक्त (बोलकर या लिखकर) करते समय हम वाक्य के बीच में कुछ क्षण के लिए रुकते हैं। इसी को 'विराम' कहते हैं। लिखते समय इसे दिखाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं।

(ग) **पूर्ण भूतकाल–**यदि क्रिया बहुत समय पहले संपन्न हो चुकी हो तो उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

बाजार बंद हो चुका था। उसने पानी पी लिया था।

मैंने यह पुस्तक खरीदी थी।

उपर्युक्त सभी वाक्यों में क्रिया का संपादन बहुत समय पहले हो चुका है। अत: ये सभी क्रियाएँ 'पूर्ण भूतकाल' हैं। पूर्ण भूतकाल की क्रियाओं के अंत में 'था', 'थी', 'थे' आदि लगा होता है।

अपूर्ण भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में आरंभ होने और अब तक चलने का बोध हो, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं; जैसे—

वर्षा हो रही था।

मोर नाच रहा था।

श्याम पुस्तक पढ़ रही थी।

अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहे थे।

(घ) जिन वाक्यों में एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या एक से अधिक उपवाक्य उस पर आश्रित हों, वे **मिश्रित वाक्य** कहलाते हैं; जैसे—

मौसम विभाग ने भविष्यवाणी की है। कि आज वर्षा होगी।

प्रधान उपवाक्य **आश्रित उपवाक्य**

(ङ) क्रिया के जिस रूप से उसके होने या करने के समय का बोध होता है उसे **काल** कहते हैं। काल तीन प्रकार के होते हैं—1. वर्तमान काल, 2. भूतकाल, 3. भविष्य काल।

4. **निर्देशानुसान काल परिवर्तित कीजिए–**

स्वयं करें।

1. भाषा, लिपि और व्याकरण

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (ii), 3. (iii), 4. (i), 5. (iii)

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पुस्तक पढ़ने में **लिखित** भाषा का प्रयोग होता है।
2. भाषा शब्द **भष्** धातु से बना है।
3. भाषा का मूल रूप **मौखिक** है।
4. समाचार-पत्र में **लिखित** भाषा के दर्शन होते हैं।
5. सरकारी कामकाज में भाषा का **लिखित** रूप प्रयोग किया जाता है।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. **राष्ट्रभाषा–**यह वह भाषा है जो किसी भी देश के अधिकांश निवासी बोलते हैं। भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी है जिसे देश के अधिकांश भागों में बोला जाता है। इसलिए 14 सितंबर, 1949 को संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी-अपनी राष्ट्रभाषा होती है; जैसे—जापानी, चीनी, रूसी, जर्मन, फ्रांसीसी, अंग्रेजी आदि।

   मातृभाषा–इस भाषा को बच्चा अपने घर-परिवार, माता-पिता, और संबंधित परिवेश द्वारा सीखता है; जैसे—पंजाबी तथा मलयालम भाषा-भाषी माता-पिता की संताने स्वत: ही क्रमश: पंजाबी व मलयायम भाषा सीख जाती हैं वह सहज रूप से उसका प्रयोग करती हैं। इस प्रकार पंजाबी व मलयालम उनकी मातृभाषाएँ हैं।
2. भाषा सार्थक शब्दों का वह समर्थ साधन है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर, सुनकर या लिखकर समाज के अन्य व्यक्तियों से अपने भावों तथा विचारों का आदान-प्रदान करता है।

   भाषा के दो प्रमुख रूप होते हैं—

   (i) मौखिक भाषा,

   (ii) लिखित भाषा।
3. इन भाषाओं की संख्या 22 है। जो निम्न प्रकार हैं—हिंदी, उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, डोगरी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, उड़िया, असमिया, सिंधी, बांग्ला, संस्कृत, कोंकणी, मलयालम, नेपाली, बोड़ो, मणिपुरी, मैथिली, तथा संथाली।
4. **राजभाषा–**यह भाषा सरकारी काम-काज की भाषा होती है। मुख्यत: भारत में सरकारी काम-काज अंग्रेजी और हिंदी में किया जाता है, अत: भारत की राजभाषा अंग्रेजी वे हिंदी दोनों हैं।
5. किसी भाषा की उच्चारित ध्वनियों को जिन चिह्नों द्वारा लिखा जाता है, उसे **लिपि** कहते हैं।

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
उर्दू	फारसी	रूसी	सिरिलिक
स्पेनिश	रोमन	अरबी	फारसी

2. वर्ण-विचार

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (ii), 3. (iii), 4. (i), 5. (i)

(ख) उचित शब्दों का प्रयोग करके रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. जिन व्यंजनों के उच्चारण में स्वर तंत्रिकाओं में कंपन होता है, वे **सघोष वर्ण** कहलाते हैं।
2. अनुस्वार का उच्चारण **नाक** से किया जाता है।
3. क, ख, ग, घ का उच्चारण स्थान **मुँह** है।
4. वर्ण के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध समूह को **शब्द** कहते हैं।
5. **अं, अः** अयोगवाह है जिसका उच्चारण (ह) के समान होता है।

3. वर्तनी

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. लिपि के चिह्नों का सार्थक विन्यास ही **वर्तनी** कहलाता है। किसी भी शब्द को लिखने की एक विधि होती है। शब्दों को लिखने की इस विधि को वर्तनी कहते हैं।
2. हिंदी की वर्तनी के अशुद्ध होने के मुख्य कारण निम्न हैं—
   (i) क्षेत्रीय भाषा तथा स्थानीय बोलियों का प्रभाव
   (ii) व्याकरण के मानक नियमों के प्रति अज्ञानता
   (iii) अहिंदी भाषी लोगों द्वारा हिंदी का अशुद्ध उच्चारण करना

4. शब्द-विचार

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i), 3. (ii), 4. (i), 5. (iii)

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. **तत्सम शब्द–**तत्सम (तत् + सम) शब्द का अर्थ है—'उनके समान'। यहाँ 'उस' से तात्पर्य है—संस्कृत के समान।

   हिंदी में बहुत सारे शब्द संस्कृत से उसी रूप में ग्रहण कर लिए गए हैं जिस रूप में उनका प्रयोग संस्कृत में होता है। इसलिए उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे—अग्नि, पुष्प, पृथ्वी, सूर्य, स्वर्ण, प्रकाश आदि।

   तद्भव शब्द–तद्भव का अर्थ है—'उससे उत्पन्न'। संस्कृत के वह शब्द जो हिंदी में परिवर्तित रूप में प्रचलित हैं, उन्हें

तद्भव कहते हैं; जैसे—सात (सप्त), काम (कर्म), बरस (वर्ष), दूध (दुग्ध), आग (अग्नि), पत्ता (पत्र) आदि।

2. **विकारी शब्द–**'विकार' का शाब्दिक अर्थ परिवर्तन है। जिन शब्दों का रूप विभिन्न परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित हो जाता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं; जैसे—'बच्चा' शब्द प्रयोग के कारण बच्चे, बच्चों आदि में परिवर्तित हो जाता है। इसी प्रकार तू, तुम, तूने, तुम्हें आदि भी विकारी शब्द हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया शब्द विकारी शब्द होते हैं।

   अविकारी शब्द–अविकारी का अर्थ होता है—कभी न परिवर्तित होने वाला। जिन शब्दों का रूप सदा एक-सा रहता है और जिनमें कोई विकार या परिवर्तन नहीं होता, अविकारी शब्द कहलाते हैं; जैसे—तथा, धीरे-धीरे, तक, भर, इसलिए आदि। क्रिया-विशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक तथा विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द होते हैं।

3. **देशज शब्द–**पगड़ी, लोटा, ठेठ, झोला, खाट।

   विदेशी शब्द–मेहमान, सरकार, मजदूर, मेज, चिराग।

4. रचना के आधार पर शब्द के तीन भेद हैं—

   (क) रूढ़ शब्द— कम, अधिक, दिन, रात, वर्षा, सर्दी, गर्मी, सब, जग आदि।

   (ख) यौगिक शब्द—हिमालय = हिम + आलय

   (ग) योगरूढ़ शब्द—प्रजा + पति = प्रजापति = ब्रह्मा

5. दो यो दो से अधिक वर्णों के मेल से बना सार्थक ध्वनि समूह शब्द कहलाता है।

   व्याकरण के नियमों के अनुसार बँधे हुए, वाक्यों में प्रयुक्त शब्द पद कहलाते हैं।

   सार्थक वर्णों का व्यवस्थित समूह शब्द कहलाता है। जब इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है। तो ये व्याकरण के नियमों (कारक, वचन, लिंग आदि) आदि से बँध जाते हैं। वाक्य में प्रयोग करने पर शब्द पद बन जाता है; जैसे—आज लोगों ने जन-जागरण रैली निकाली।

   उपर्युक्त वाक्य में 'आज', 'लोगों', 'ने', 'जन-जागरण', 'रैली', 'निकाली' इत्यादि शब्द परंतु वाक्य में प्रयुक्त होने के पश्चात् होने के पश्चात् इन्हें पद कहा जाता है।

5. संधि

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i), 3. (iii), 4. (iii), 5. (ii)

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. मुख्य रूप से संधि के तीन भेद है—1. स्वर संधि, 2. व्यजंन संधि, 3. विसर्ग संधि।

   (क) स्वर संधि–ऊ + ऊ = ऊ, भू + ऊष्मा = भूष्मा

   (ख) व्यंजन संधि–प = ब, अप् + ज = अब्ज

   (ग) विसर्ग संधि–नि: + अर्थक = निरर्थक

2. व्यंजन का किसी अन्य व्यंजन अथवा स्वर से संयोग होने पर जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं।

3. दो निकटवर्ती ध्वनियों के पारस्परिक मेल के कारण जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे **संधि** कहते हैं।

   हिम + आलय = हिमालय

4. **यण संधि–**जब 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' तथा 'ऋ' के पश्चात् कोई असमान स्वर आए तो 'इ' व 'ई' का 'य्', 'उ' और 'ऊ' का 'व्' तथा 'ऋ' का 'र्' हो जाता है।

   अयादि संधि–जब 'ए', 'ऐ' तथा 'ओ', 'औ' का संयोग इनसे भिन्न स्वरों से किया जाता है तब 'ए' का 'अय्' 'ऐ' का 'आय्' 'ओ' का 'अव्' तथा औ का 'आव्' हो जाता है।

5. स्वर और स्वर के आपस में मेल होने के कारण जो विकार (परिवर्तन) उत्पन्न होता है, उसे **स्वर संधि** कहते हैं।

   स्वर संधि के निम्नलिखित पाँच भेद है—दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण संधि, अयादि संधि।

6. उपसर्ग

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (ii), 4. (ii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. उपसर्ग वे लघुत्तम शब्दांश हैं जो मूल शब्द के प्रारंभ में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

   मूल शब्दों से नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को शब्द-निर्माण या शब्द-रचना की प्रक्रिया कहते हैं।

उपदेश	उप	देश
अनीति	अ	नीति

2. हिंदी में तीन प्रकार के उपसर्ग हैं—

   तत्सम उपसर्ग (संस्कृत के)

कु	बुरा	कुपुत्र, कुकर्म, कुरूप, कुमति
सु	अच्छा/श्रेष्ठ	सुबोध, सुगम, सुपुत्र, स्वागत

   तद्भव उपसर्ग (हिंदी के)

चौ	चार	चौपाया, चौमासा, चौराहा
बिन	बिना	बिनबात, बिनब्याहा, बिनमाँगी

   आगत उपसर्ग (अंग्रेजी, उर्दू-फारसी के)

हर	प्रत्येक	हरवक्त, हरतरफ, हररोज
सर	मुख्य	सरपंच, सरताज, सरहद

7. प्रत्यय

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (ii), 4. (ii)

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं या नया शब्द बना देते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे—सुंदर + ता = सुंदरता। उदाहरण—

   मूल शब्द दूध में वाला (प्रत्यय) जोड़कर 'दूधवाला' शब्द बनाया जाता है।

   नौकर शब्द में आनी (प्रत्यय) जोड़कर नौकरानी शब्द बनाया जाता है।

2. स्वयं करें।

8. समास

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (i), 3. (iii), 4. (iii), 5. (iii)

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **कर्मधारय समास–**जिस सामासिक पद में उत्तर पद प्रधान हो और दोनों पदों में उपमेय-उपमान अथवा विशेषण-विशेष्य का संबंध हो, उसे कर्मधारय समास कहते हैं; जैसे—

उपमेय	उपमान
प्रेमलता	प्रेमरूपी लता
नरसिंह	नरों में सिंह के समान

बहुव्रीहि समास–जिन सामासिक पदों के दोनों पदों में से कोई भी पद प्रधान न हो और दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हों, उन्हें बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे—

गजानन	गज (हाथी) के समान आनन (मुख) है जिसका	अर्थात	गणेश
घनश्याम	घन के समान काला है जो	अर्थात	कृष्ण

2. दो या दो से अधिक शब्दों को संक्षिप्त करके नए सार्थक शब्द बनाने की प्रक्रिया को समास कहते हैं।

   राजमहल = राजा का महल

   मृगनयनी = हिरन के समान नेत्रों वाली

   घुड़सवार = घोड़े पर सवार

3. समास के छः भेद होते हैं—

   अव्ययीभाव समास—

यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो सके

तत्पुरुष समास—

यशप्राप्त	यश को प्राप्त

कर्मधारय समास—

प्रेमलता	प्रेमरूपी लता

द्विगु समास—

नवरात्रि	नौ रात्रियों का समाहार

द्वंद्व समास—

सत्य-असत्य	सत्य या असत्य

बहुव्रीहि समास—

गजानन	गज (हाथी) के समान आनन (मुख) है जिसका	अर्थात	गणेश

4. जिस सामाजिक पद अथवा समस्त पद का पूत्र पद अव्यय एवं प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

समस्त पद	समास-विग्रह
यथाशीघ्र	जितना शीघ्र हो सके
यथा रीति	रीति के अनुसार
आमरण	मरने तक
आजन्म	जन्म से लेकर

9. संज्ञा

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (ii), 3. (i), 4. (iii), 5. (i)

(ख) सही शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. बूढ़ा व्यक्ति अपने **दुख** से दुखी है।
2. मीठे शहद की **मिठास** तो चखो।
3. मनुष्य को अपनी **मनुष्यत्व** नहीं छोड़नी चाहिए।
4. चतुर व्यक्ति की **चतुराई** हर जगह नहीं चलती।
5. वह सातवीं कक्षा तक पढ़ा; बाद में उसने **पढ़ाई** छोड़ दी।

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. जिन संज्ञा शब्दों द्वारा किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा वस्तु विशेष का बोध होता है, उन्हें **व्यक्तिवाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे—भावना, मेरठ, रामचरितमानस, लाल किला, तुलसीदास, कृष्ण आदि।

   यहाँ 'भावना', 'तुलसीदास' व 'कृष्ण' व्यक्तियों के, 'मेरठ' व 'लाल किला' स्थान विशेष के एवं 'रामचरितमानस' पुस्तक विशेष का नाम है। अत: ये सभी व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं।

2. किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव आदि के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के तीन भेद होते है—1. व्यक्तिवाचक संज्ञा, 2. जातिवाचक संज्ञा, 3. भाववाचक संज्ञा।

3. भाववाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित पाँच प्रकार से बनाई जा सकती हैं—(क) जातिवाचक संज्ञा से,

(ख) सर्वनाम से,

(ग) विशेषण से,

(घ) क्रिया से,

(ङ) अव्यय से।

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मित्र	मित्रता
शत्रु	शत्रुता
सज्जन	सज्जनता

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
अहं	अहंकार
अपना	अपनत्व
सर्व	सर्वस्व

विशेषण	भाववाचक संज्ञा
कुशाग्र	कुशाग्रता
शिष्ट	शिष्टता
आलसी	आलस्य

क्रिया	भाववाचक संज्ञा
बहना	बहाव
फैलना	फैलाव
सिलना	सिलाई

अव्यय	भाववाचक संज्ञा
शीघ्र	शीघ्रता
समीप	सामीप्त
नीच	नीचता

4. संज्ञा शब्दों द्वारा किसी प्राणी, वस्तु के पूरे वर्ग अथवा संपूर्ण जाति का बोध हो, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—पक्षी, महानगर, आदमी, छात्र, नेता, पुस्तकें आदि। ये सभी एक ही प्रकार के प्राणियों, स्थान तथा व्यक्तियों का अर्थात् अपनी-अपनी जाति का बोध करा रहे हैं। अत: ये सभी जातिवाचक संज्ञाएँ हैं।

5. जो संज्ञा शब्द किसी धातु अथवा तरल पदार्थ का बोध कराते हैं, उन्हें **द्रव्यवाचक संज्ञा** कहते हैं।

6. जिन संज्ञा शब्दों द्वारा एक ही जाति के व्यक्तियों या वस्तुओं के समुदाय अथवा समूह का बोध होता है, उन्हें **समूहवाचक संज्ञा** कहते हैं।

10. लिंग

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (iii), 3. (iii), 4. (iii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. स्वयं करें।
2. लिंग का अर्थ है—चिह्न। व्याकरण में इसे स्त्री-पुरुष के भाव का भेदक माना जाता है। शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है अथवा स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में **लिंग** कहा जाता है।

   हिंदी में लिंग दो प्रकार के होते हैं—1. पुल्लिग, 2. स्त्रीलिंग।
3. **'आनी' प्रत्यय जोड़कर**

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
देवर	देवरानी
जेठ	जेठानी

'आ' प्रत्यय जोड़कर

वृद्ध	वृद्धा
पूज्य	पूज्या
सुत	सुता

4. स्वयं करें।

11. वचन

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (iii)

(ग) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. जिस संज्ञा शब्द से किसी प्राणी या वस्तु की संख्या का बोध होता है, उसे **वचन** कहते हैं। हिंदी भाषा में वचन के दो भेद होते हैं—1. एकवचन, 2. बहुवचन।

   एकवचन–जिस शब्द के द्वारा किसी वस्तु, प्राणी अथवा पदार्थ की संख्या के केवल एक होने का बोध होता है, **एकवचन** कहलाता है; जैसे—पक्षी, पेड़, मेज, पुस्तक, घोड़ा, बंदर, लड़का आदि।

   बहुवचन–शब्द के जिस रूप से किसी वस्तु, प्राणी अथवा पदार्थ के एक से अधिक होने का बोध होता है, **बहुवचन** कहलाता है; जैसे—चिड़ियाँ, कारें, पुस्तकें, घोड़े, लड़के आदि।
2. वचन की पहचान—

   संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों द्वारा—

   संज्ञा–बच्चा पढ़ रहा है। **बच्चे** पढ़ रहे हैं।

   सर्वनाम–मैं कल स्कूल जाऊँगा। **हम** कल स्कूल जाएँगे।

   विशेषण–लाल फूल सुंदर है। **लाल** फूल सुंदर हैं।

क्रिया के द्वारा–

कबूतर बाजरा **चुग रहा है।** कबूतर बाजरा **चुग रहे हैं।**

छात्र चला गया है। छात्र चले गए हैं।

(ग) **सदा एकवचन रहने वाले शब्द–**कुछ शब्द सदैव एकवचन रूप में प्रयुक्त होते है; जैसे—आग, जनता, वर्षा, दूध आदि।

(घ) **सदा बहुवचन रहने वाले शब्द–**कुछ शब्द सदैव बहुवचन रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—आँसू, प्राण, बाल, लोग आदि।

उसके **आँसू** सूख नहीं रहे थे।

भागते-भागते उसके **प्राण** निकल गए।

तुम्हारे **बाल** झड़ रहे हैं।

नेता जी की करतूत **लोग** समझ गए हैं।

12. कारक

(क) **सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

1. (iii), 2. (iii), 3. (iii), 4. (i).

(ख) **रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित परसर्गों द्वारा कीजिए–**

1. मगरमच्छ नदी **से** बाहर आ रहा है।
2. बाढ़ पीड़ितों **की** सहायता कीजिए।
3. ऊँट रेत **में** आराम से चलता है।
4. समुद्र **में** लहरें मचल रही हैं।
5. जंगल **में** आग लगी है।

(ग) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

1. संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य में प्रयुक्त अन्य पदों विशेषकर क्रिया से जो संबंध होता है, उसे **कारक** कहते हैं।

   कारक के आठ भेद माने जाते हैं—(i) कर्ता कारक, (ii) कर्म कारक, (iii) करण कारक, (iv) संप्रदान कारक, (v) अपादान कारक, (vi) अधिकरण कारक, (vii) संबंध कारक, (viii) संबोधन कारक।

2. संज्ञाओं के साथ **पर, को, से, ने, की, अरे, का** आदि शब्द आए हैं। ये शब्द इन संज्ञाओं का आपस में अथवा क्रिया से संबंध बता रहे हैं। इन्हें **कारक-चिह्न** अथवा **परसर्ग** कहते है।

3. **कर्म कारक (को)–**वाक्य में जिस संज्ञा/सर्वनाम पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़ता है और जिसकी अपेक्षा क्रिया करती है, उसे कर्मकारक कहते हैं। कर्मकारक के साथ 'को' परसर्ग का प्रयोग किया जाता है, पर कई अवस्थाओं में इस परसर्ग का प्रयोग नहीं भी होता। 'को' परसर्ग का प्रयोग प्राय: प्राणिवाचक संज्ञा के साथ होता है।

   संप्रदान कारक (को, के लिए)–'संप्रदान' का अर्थ है—किसी को कुछ देना या प्रदान करना। वाक्य में कर्ता जिसके लिए क्रिया करता है या जिसे कुछ देता है, उसे संप्रदान कारक कहते हैं।

4. **करण कारक (से/के द्वारा)–**'करण' का अर्थ है—साधन या माध्यम। जिसकी सहायता से क्रिया सम्पन्न हो वह संज्ञा/सर्वनाम करण कारक होता है। इसके विभक्ति चिह्न (परसर्ग) है—से, के द्वारा।

   अपादान कारक (से-पृथकता)–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने का भाव प्रकट हो, वहाँ अपादान कारक होता है। इसका परसर्ग 'से' होता है।

13. सर्वनाम

(क) **सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–**

1. (iii), 2. (iii), 3. (i), 4. (ii).

(ख) **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

1. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम–**जिस सर्वनाम से किसी निश्चित व्यक्ति, प्राणी या वस्तु आदि का बोध नहीं होता है, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—कोई, कुछ। 'कोई' सर्वनाम किसी व्यक्ति का बोध कराता है और 'कुछ' सर्वनाम किसी वस्तु वस्तु का; जैसे—

   दूध में **कुछ** पड़ा है।

   मेरा **कुछ** खो गया है।

   दरवाजें पर **कोई** खड़ा है।

2. **जो** परिश्रम करेगा **वह** सफल होगा।

   जिसको आपने बुलाया था, **वह** बाजार गया है।

   जैसा बोओगे **वैसा** काटोगे।

3. स्वयं करें।

4. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं—

   उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम–वक्ता अर्थात् बोलने वाला अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उसे **उत्तम पुरुष सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—**मैं** कल चलूँगा।

   मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम–श्रोता से बात करते हुए उसके नाम के बदले जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें **मध्यम पुरुष सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—**तू** नहीं सुधरेगा।

   अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनाम शबदों का प्रयोग वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति के लिए किया जाए, उन्हें अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

   वे आपस में लड़ रहे हैं।

5. 'सर्वनाम' का शाब्दिक अर्थ है—सर्व (सब) का नाम। व्याकरण में सर्वनाम ऐसे शब्दों को कहते हैं, जिनका प्रयोग सब प्रकार के नामों (संज्ञाओं) के लिए अथवा उनके स्थान पर हो सके। सर्वनाम के छ: भेद हैं—(i) पुरुषवाचक सर्वनाम, (ii) निश्चयवाचक सर्वनाम, (iii) अनिश्चयवाचक सर्वनाम, (iv) प्रश्नवाचक सर्वनाम, (v) संबंधवाचक सर्वनाम, (vi) निजवाचक सर्वनाम।

14. विशेषण

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (i), 3. (i), 4. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. **संख्यावाचक विशेषण–**जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम (विशेष्य) की संख्या या गणना का बोध कराएँ, उसे **संख्यावाचक विशेषण** कहते हैं; जैसे—

   सब लोगों ने मेरा ख्याल रखा।

   कई लड़को ने प्रतियोगिता जीती।

   परिमाणवाचक विशेषण–जिन विशेषण शब्दों से किसी वस्तु अथवा पदार्थ की मात्रा, नाप, तौल आदि का बोध होता है, उन्हें **परिमाणवाचक विशेषण** कहते हैं; जैसे—

   तालाब में **बहुत-सी** मछलियाँ हैं।

   थोड़ा भोजन कर लो।

2. स्वयं करें।

4. इस तुलना के आधार पर विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं—1. मूलावस्था, 2. उत्तरावस्था, 3. उत्तमावस्था।

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तरावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम
निकट	निकटतर	निकटतम

5. जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें **विशेषण** कहते हैं। विशेषण के चार भेद हैं—(i) गुणवाचक विशेषण, (ii) संख्यावाचक विशेषण, (ii) परिमाणवाचक विशेषण, (iv) सार्वनामिक विशेषण।

15. क्रिया

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (iii), 3. (i), 4. (ii), 5. (iii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. कर्म के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते हैं—(क) अकर्मक क्रिया, (ख) सकर्मक क्रिया।

   अकर्मक क्रिया–अकर्मक—अ (बिना) + कर्मक = बिना कर्म के। जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं किया गया हो तथा उसका फल कर्ता पर पड़े तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जिस क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ता हो, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं। ये क्रियाएँ कर्म रहित होती हैं, जैसे—सोना, डाँटना, चलना, जाना, हँसना, रोना आदि।

   सूरज निकल रहा है।

   सकर्मक क्रिया–यदि वाक्य में क्रिया के साथ कर्म का भी प्रयोग किया गया हो क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, तो वह सकर्मक क्रिया होती है। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता के स्थान पर कर्म पर पड़ता है उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे—पढ़ना, देखना, खाना, पहन्ना, काटना, रखना, धोना, पोंछना आदि।

   नीमा केक **काट रही है**।

2. जिन शब्दों से किसी कार्य के करने या होने का पता चलता है, उन्हें **क्रिया** कहते हैं।

3. किसी संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण से बनने वाली क्रिया को **नामधातु** कहते हैं; जैसे—

संज्ञा शब्दों से

खरीद	खरीदना
ठग	ठगना

सर्वनाम शब्दों से

अपना	अपनाना

विशेषण शब्दों से

नरम	नरमाना
टिमटिम	टिमटिमाना

4. रचना के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित पाँच भेद हैं—(i) प्रेरणार्थक क्रिया, (ii) संयुक्त क्रिया, (iii) नामधातु क्रिया, (iv) पूर्वकालिक क्रिया, (v) सामान्य क्रिया।

5. स्वयं करें।

16. काल

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (i), 3. (i), 4. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. क्रिया का वह रूप जिससे कार्य के संपन्न होने के समय का बोध हो, उसे **काल** कहते हैं।

   इस आधार पर काल को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—(i) भूतकाल, (ii) वर्तमान काल, (iii) भविष्य काल।

2. क्रिया के जिस रूप से उसके बीते हुए समय में संपन्न होने का बोध होता है, उसे **भूतकाल** कहते हैं। भूतकाल के निम्नलिखित छः भेद हैं—(i) सामान्य भूतकाल, (ii) आसन्न भूतकाल, (iii) पूर्ण भूतकाल, (iv) अपूर्ण भूतकाल, (v) संदिग्ध भूतकाल, (vi) हेतु–हेतुमद् भूतकाल।

3. क्रिया के जिस रूप से उसके भूतकाल में संपन्न होने में संदेह हो, उसे **संदिग्ध भूतकाल** कहते हैं।

   महेश खाना **खा चुका होगा**।

चोर **पकड़ा गया होगा**।

मास्टर जी **आ गए होंगे**।

4. क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में पूर्ण होने की संभावना का बोध हो, उसे संभाव्य भविष्य काल कहते हैं; जैसे—

शायद आज पिता जी **आ जाएँ**।

संभवत: चोर आज **पकड़ा जाए**।

शायद माँ कल बाजार **जाएँ**।

संभवत: हम लोग इस वर्ष आगरा **जाएँ**।

17. वाच्य

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (iii), 3. (i), 4. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में प्रयुक्त उसके रूप का आधार कर्ता, कर्म, अथवा भाव है, वह **वाच्य** कहलाता है।

पिताजी आ रहे हैं।

मोहन से रोटी खाई जाती है।

यहाँ सोया नहीं जाता।

2. हिंदी में तीन वाच्य हैं—1. कर्तृवाच्य, 2. कर्मवाच्य, 3. भाववाच्य।

कर्तृवाच्य–जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती है, उन्हें कर्तृवाच्य कहते हैं। इनमें कर्ता प्रमुख होता है और कर्म गौण होता है। इसमें लिंग, वचन कर्ता के अनुसार होते हैं; जैसे—

मोहन रोटी खाता है।

सुनीता सेब खाती है।

कर्मवाच्य–कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता रहती है। लिंग, वचन, कर्म के अनुसार होते हैं। इसमें 'से' अथवा 'द्वारा', 'के द्वारा' का प्रयोग होता है; जैसे—

मेरे द्वारा पत्र लिखा गया।

रवि के द्वारा पाठ पढ़ा गया।

भाववाच्य–इस प्रकार के वाक्यों में कर्ता और कर्म दोनों अप्रधान होते हैं, इसलिए इसमें केवल अकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है। वस्तु अकर्मक क्रिया का कर्मवाच्य ही भाववाच्य होता है; जैसे—मुझसे चला नहीं जाता।

18. क्रिया–विशेषण

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. स्वयं करें।
2. **क्रिया-विशेषण और विशेषण में अंतर–**क्रिया-विशेषण क्रिया की विशेषता बताते हैं, जबकि विशेषण किसी संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता को व्यक्त करते हैं; जैसे—

विशेषण

छुरी की धार **तेज** है।

उसके पास **बहुत** समय है।

क्रिया-विशेषण

चीता **तेज** दौड़ता है।

काम **बहुत** कर लिया, अब आराम करो।

3. जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, **क्रिया-विशेषण** कहलाते हैं।

सरिता **तेज** हँस रही थी।

वह **बहुत** रोया।

कम बोलना लाभदायक है।

4. हिंदी भाषा में क्रिया-विशेषण के मुख्यत: चार भेद हैं—

(क) रीतिवाचक क्रिया-विशेषण—

वह धीरे-धीरे चलता है।

वह सरपट दौड़ने लगा।

(ख) कालवाचक क्रिया-विशेषण—

सुनिता अभी आई है।

वह परसो चला गया था।

(ग) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण—

मोहन बाहर खड़ा है।

वह ऊपर बैठा है।

(घ) परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण—

विनीता कम बोलती है।

तुम भी थोड़ा खा लो।

19. संबंधबोधक

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित संबंधबोधकों के द्वारा कीजिए–

1. वह दर्द **के कारण** सारी रात कराहता रहा।
2. मेरे घर **के पहले** एक बगीचा है।
3. चाकू **से** फल काटो।
4. मेज **के पास** कुछ रखा हुआ है।
5. कानून **के विरुद्ध** कोई नहीं जा सकता।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. संबंधबोधक वे अविकारी शब्द हैं जो संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर वाक्य में प्रयुक्त अन्य संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ उनके संबंध का बोध कराते हैं। जैसे—बादल के पीछे चाँद छिपा है।

20. समुच्चयबोधक

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित समुच्चयबोधक द्वारा कीजिए–

1. उचित व्यवहार करो **ताकि** तुम्हें लोग पसंद करें।
2. वह मेहनत तो खूब करता है **परन्तु** सफल नहीं हो पाता।
3. ठीक से कार्य करो **जिससे कि** प्रशंसा मिले।
4. मकान सही नहीं बना था **इसलिए** गिर गया।
5. **यदि** वह मेहनत करता **तो** अव्वल आता।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद होते हैं—1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक, 2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक।

   समानाधिकरण समुच्चयबोधक–जिन अव्ययों के द्वारा समान स्तर के वाक्यों अथवा समान महत्व वाले शब्दों अथवा वाक्यांशों को जोड़ा जाता है, उन्हें **समानाधिकरण समुच्चयबोधक** कहते हैं; जैसे—

   कुछ लोग दर्शन करके चले गए **और** कुछ अब आ रहे हैं।

   व्यधिकरण समुच्चयबोधक–जो शब्द किसी प्रधान वाक्य में आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें **व्यधिकरण समुच्चयबोधक** कहते हैं; जैसे—

   स्पष्ट लेख लिखो **ताकि** पढ़ा जा सके।

2. जो शब्द किसी प्रधान वाक्य में आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें **व्यधिकरण समुच्चयबोधक** कहते हैं। व्यधिकरण समुच्चयबोधक के निम्नलिखित चार भेद हैं—

   (क) कारणसूचक, (ख) संकेतसूचक, (ग) स्वरूपसूचक, (घ) उद्देश्यसूचक।

3. समानाधिकरण समुच्चबोधक के निम्नलिखित भेद हैं—(क) संयोजक, (ख) विभाजक, (ग) विरोधसूचक, (घ) परिणामसूचक।
4. समुच्चयबोधक का शाब्दिक अर्थ है—साथ में होने अथवा जुड़ने का बोध कराने वाला समुच्चयबोधक को **योजक** भी कहते हैं। इनके द्वारा वाक्य के दो पदों, उपवाक्यों अथवा वाक्यों को जोड़ा जाता है। समुच्चयबोधक दो पदों, उपवाक्यों को न केवल आपस में जोड़ते हैं अपितु अलग भी करते हैं।

21. विस्मयादिबोधक

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित विस्मयादिबोधक अव्ययों द्वारा कीजिए–

1. **अरे!** बड़ा भयावह दृश्य था।
2. **क्या!** वह बहुत अभागा है।
3. **बाप रे!** तूफान आने वाला है।
4. **अरे!** तुम कब आए?
5. **अच्छा!** मुझे कल जाना है।
6. **वाह!** इससे अच्छा कुछ भी नहीं।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. जिन शब्दों से हर्ष, भय, घृणा, दुःख, विस्मय और लज्जा आदि भावों का प्रदर्शन होता है, उन्हें **विस्मयादिबोधक** कहते हैं।

   विस्मयबोधक–हैं!, अरे!, ओह!, सच! आदि।

   घृणाबोधक–छि:!, धत!, धिक!, थू-थू! आदि।

2. वे अव्यय जो किसी शब्द के बाद उसे बल देने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं, **निपात** कहलाते हैं।

22. वाक्य–विचार

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (iii), 3. (ii), 4. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वाक्य के गुण—(i) सार्थकता, (ii) योग्यता, (iii) आकांक्षा, (iv) निकटता, (v) पदक्रम, (vi) अन्वय।
2. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद—

   विधानवाचक वाक्य–ठंडी-ठंडी हवा चल रही है।

   निषेधवाचक (नकारात्मक) वाक्य–वह नहीं आया।

   प्रश्नवाचक वाक्य–आप क्या कर रहे हैं?

   आज्ञावाचक वाक्य–अब आप जा सकते हैं।

   संदेहवाचक वाक्य–शायद आज वर्षा हो।

   इच्छावाचक वाक्य–आपकी यात्रा मंगलमय हो।

   संकेतवाचक वाक्य–यदि वर्षा होती तो फसल अच्छी होती।

   विस्मयवाचक वाक्य–अरे! तुम कब आए?

3. रचना के आधार पर वाक्य भेद—(i) सरल वाक्य, (ii) संयुक्त वाक्य, (iii) मिश्र वाक्य।
4. वाक्य पदों का वह व्यवस्थित समूह है जिसमें पूर्ण अर्थ देने की शक्ति होती है अर्थात् शब्दों के सार्थक मेल से बनने वाली इकाई वाक्य कहलाती है।
5. गणेश पुस्तक पढ़ता है।

   कृष्ण कुमार कहानी लिखता है।

   उपर्युक्त वाक्यों में दो अंग हैं। एक अंग **कर्ता** के बारे में सूचना दे रहा है; जैसे—गणेश और कृष्ण कुमार।

   दूसरा अंग **क्रिया** के बारे में सूचना दे रहा है; जैसे—पढ़ता है, लिखता है।

   पहला अंग **उद्देश्य** कहलाता है और दूसरा अंग **विधेय**।

   इस प्रकार वाक्य के दो अंग होते हैं—1. उद्देश्य, 2. विधेय।

23. विराम-चिह्न

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (iii), 2. (ii), 3. (ii).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. **अल्पविराम (,)–**बोलते या लिखते समय पूर्ण विराम की तुलना में कम समय तक रुकने के लिए, अल्पविराम चिह्न का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

   (क) वह बाजार से आम, संतरे, केले और अमरूद लाया।

   (ख) मोहन, सोहन, गीता तथा हेमंत ने गृहकार्य नहीं किया।

   अर्द्धविराम (;)–अल्पविराम में कुछ अधिक समय तक व पूर्ण विराम से कुछ कम समय तक रुकने के लिए 'अर्द्धविराम चिह्न' का प्रयोग करते हैं; जैसे—खाना खा, लीजिए; फिर बात करेंगे।

2. भाषा के लिखित स्वरूप में कुछ विशेष स्थानों पर रुकने का संकेत करने वाले चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

   व्यक्तिगत जीवन में हम अपने उद्गारों को भाषा के माध्यम से दूसरों के समक्ष रखते हैं। विराम-चिह्नों का प्रयोग भाषा में स्पष्टता लाता है। यदि विराम-चिह्नों के प्रयोग के बिना भाषा निरंतर बोली या लिखी जाए तो भाषा का सौंदर्य तो नष्ट होगा ही साथ ही अर्थ का अनर्थ भी हो जाएगा।

   भाषा में विराम-चिह्नों का बहुत महत्व है। बिना विराम-चिह्नों के भाषा का शाब्दिक अर्थ ही परिवर्तित हो जाता है। विराम-चिह्नों का गलत प्रयोग भी अर्थ का अनर्थ कर देता है।

24. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (ii), 2. (i).

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है। यह अपने आप में पूर्ण इकाई होती है। प्राय: इसका प्रयोग किसी बात का समर्थन या खंडन करने के लिए किया जाता है।

2. मुहावरे पूरे वाक्य न होकर वाक्यांश होते हैं। ये वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं।

   उँगली पर नचाना–(वश में कर लेना)—आजकल की पत्नियाँ अपने पति को अपनी उँगली पर नचाती हैं।

3. मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग भाषा को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है।

   लोकोक्ति पूरा वाक्य होती है। यह अपने आप में पूर्ण इकाई होती है। प्राय: इसका प्रयोग किसी बात का समर्थन या खंडन करने के लिए किया जाता है।

   मुहावरे पूरे वाक्य न होकर वाक्यांश होते हैं। ये वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं।

25. पर्यायवाची शब्द

(क) सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

1. (i), 2. (ii), 3. (i).

26. विपरीतार्थक (विलोम) शब्द

(क) निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

1. व्यय	2. निराशा
3. उपेक्षा	4. सरल
5. सज्जन	6. धरती
7. सनाथ	8. सधवा
9. थल	10. सुधा
11. सधवा	12. निर्धन
13. मरण	14. सुलभ
15. दिन	
16. पुरातन	
17. गमन	
18. विष	
19. पतन	
20. अशुभ	
21. संकीर्ण	
22. चढ़ाव	
23. अनुदार	
24. उतार	
25. कायर	

(ख) निम्नलिखित शब्दों का उनके विलोम शब्दों से मिलान कीजिए–

शब्द	विलोम
1. शुभ	(vii) अशुभ
2. उतार	(i) चढ़ाव
3. कायर	(v) साहसी
4. अमृत	(ix) विष
5. नूतन	(viii) पुरातन
6. आदान	(iv) प्रदान
7. धनी	(x) निर्धन
8. उदार	(vi) अनुदार
9. उत्थान	(ii) पतन
10. जागृत	(iii) सुप्त

27. एकार्थी प्रतीत होने वाले शब्द

(क) निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए, कि उनके अर्थ में भिन्नता स्पष्ट हो गए–

1. दु:ख **किसी हानि का पश्चाताप लज्जित होना**

   आपकी पत्नी की मृत्यु का समाचार सुनकर हमें बहुत दु:ख पहुँचा।

   खेद **गलती मानना**

   मुझे खेद है कि तुम्हारी पुस्तक मुझसे खो गई है।

2. आमंत्रण **विशेष अवसर पर उपस्थित होने की प्रार्थना**

   माननीय मंत्री जी को इस का आमंत्रण दिया गया है।

   निमंत्रण **भोजन आदि के लिए बुलावा**

   सुशील के विवाह का सपरिवार निमंत्रण आया है।

3. शंका **संदेह**

   मुझे तुम्हारे सफल होने में शंका है।

   आशंका **अमंगल की संभावना**

   सरकार के गिरने की आशंका है।

4. अहंकार **अपने आप पर घमंड करना**

   इतना अहंकार ठीक नहीं होता।

   अभिमान **दूसरों को तुच्छ समझने का भाव**

   वह बहुत अभिमानी है।

5. उपहास **मजाक उड़ाना**

   सब सुरेश का उपहास करते हैं।

   परिहास **हँसी-मजाक**

   हास–परिहास के मध्य बैठक का समापन हुआ।

6. अगम **जहाँ पहुँचा न जा सके**

   शुक्रग्रह की यात्रा अभी तक अगम है।

   दुर्गम **जहाँ कठिन से पहुँचा जा सके**

   कैलाश मानसरोवर की यात्रा बहुत दुर्गम है।

7. मंत्रणा **गुप्त परामर्श का आदान-प्रदान**

   परमाणु शक्ति के प्रदर्शन की समस्या को लेकर विभिन्न देशों के अध्यक्षों के बीच मंत्रणा का दौर चल रहा है।

   परामर्श **राय लेना/देना**

   चिकित्सक ने रवि को एक सप्ताह तक आराम करने का परामर्श दिया।

8. प्रयोग **वस्तु को सामान्य रूप से बरतना**

   भीड़ नियंत्रण के लिए पुलिस बल प्रयोग करती है।

   उपयोग **किसी वस्तु का उचित प्रयोग करना**

   अपनी बुद्धि का उपयोग पढ़ाई–लिखाई में करो।

(ख) कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. इस कंगन में **बहुमूल्य** रत्न जुड़े हैं।
2. मुझे **खेद** है कि मेरे कारण आपको इंतजार करना पड़ा।
3. इस विषय पर आपका **परामर्श** क्या है।
4. अध्यापक ने सुशील को कक्षा से बाहर जाने का **आदेश** दिया।
5. कभी किसी का **उपहास** नहीं करना चाहिए।

28. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) निम्नलिखित शब्दों के एक शब्द लिखिए–

1. अजातशत्रु
2. दीर्घायु
3. अज्ञेय
4. अजर
5. असहनीय
6. शरणागत
7. निराधार
8. लाइलाज

(ख) निम्नलिखित वाक्यांशों का उनके लिए उपर्युक्त एक शब्द से मिलान कीजिए–

	वाक्यांश	**शब्द**
1.	जिसे जीता न जा सके	अजेय
2.	जिसे भेदा न जा सके	अभेद्य
3.	जिसके मन में छल नहीं	निश्छल
4.	जो दूसरों पर उपकार करता हो	परोपकार
5.	जिसकी उपमा न हो सके	अनुपम
6.	जिसकी कोई सीमा न हो	असीमित
7.	जिसका जन्म न हुआ हो	अजन्मा

29. निबंध–लेखन

स्वयं करें।

30. पत्र–लेखन

स्वयं करें।

31. अपठित बोध

स्वयं करें।

आदर्श प्रश्न-पत्र-I

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (ii), (ख) (i), (ग) (ii), (घ) (iii), (ङ) (ii).

2. सही शब्दों से रिक्त स्थान भरिए–

(क) मनुष्य को अपनी **मनुष्यत्व** नहीं छोड़नी चाहिए।

(ख) बूढ़ा व्यक्ति अपने **दुख** से दुखी है।

(ग) मीठे शहद की **मिठास** तो चखो।

(घ) जंगल **में** आग लगी है।

(ङ) समुद्र **में** लहरें मचल रही हैं।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) किसी भाषा की उच्चारित ध्वनियों को जिन चिह्नों द्वारा लिखा जाता है, उसे **लिपि** कहते हैं।

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
उर्दू	फारसी	रूसी	सिरिलिक
स्पेनिश	रोमन	अरबी	फारसी

(ख) **तत्सम शब्द–**तत्सम (तत् + सम) शब्द का अर्थ है—'उनके समान'। यहाँ 'उस' से तात्पर्य है—संस्कृत के समान।

हिंदी में बहुत सारे शब्द संस्कृत से उसी रूप में ग्रहण कर लिए गए हैं जिस रूप में उनका प्रयोग संस्कृत में होता है। इसलिए उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे—अग्नि, पुष्प, पृथ्वी, सूर्य, स्वर्ण, प्रकाश आदि।

तद्भव शब्द–तद्भव का अर्थ है—'उससे उत्पन्न'। संस्कृत के वह शब्द जो हिंदी में परिवर्तित रूप में प्रचलित हैं, उन्हें तद्भव कहते हैं; जैसे—सात (सप्त), काम (कर्म), बरस (वर्ष), दूध (दुग्ध), आग (अग्नि), पत्ता (पत्र) आदि।

(ग) **यण संधि–**जब 'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' तथा 'ॠ' के पश्चात् कोई असमान स्वर आए तो 'इ' व 'ई' का 'य्', 'उ' और 'ऊ' का 'व्' तथा 'ॠ' का 'र्' हो जाता है।

अयादि संधि–जब 'ए', 'ऐ' तथा 'ओ', 'औ' का संयोग इनसे भिन्न स्वरों से किया जाता है तब 'ए' का 'अय्' 'ऐ' का 'आय्' 'ओ' का 'अव्' तथा औ का 'आव्' हो जाता है।

(घ) उपसर्ग वे लघुत्तम शब्दांश हैं जो मूल शब्द के प्रारंभ में लगकर नए शब्दों का निर्माण करते हैं।

मूल शब्दों से नए शब्द बनाने की प्रक्रिया को शब्द-निर्माण या शब्द-रचना की प्रक्रिया कहते हैं।

उपदेश	उप	देश
अनीति	अ	नीति

(ङ) स्वयं करें।

4. निम्नलिखित व्यंजनों के संयोग से वर्ण बनाकर उनका प्रयोग करके चार-चार शब्द लिखिए–

(क) क् + क **क्का पक्का मक्का धक्का**

(ख) द् + ध स्वयं करें।

(ग) र् + म स्वयं करें।

(घ) त् + व स्वयं करें।

(ङ) ल् + ल **ल्ल दिल्ली बिल्ली खिल्ली**

5. निम्नलिखित शब्दों को शुद्ध करके लिखिए–

(क) अनुशंसा (ख) संपादक

(ग) मतलब (घ) विद्या

(ङ) क्षोभ (च) उपलक्ष्य

6. स्वयं करें।

7. निम्नलिखित संकेतों के आधार पर संधि के विभिन्न उदाहरण दीजिए–

स्वयं करें।

8. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्ग, मूल शब्द व प्रत्यय को अलग-अलग करके लिखिए–

स्वयं करें।

आदर्श प्रश्न-पत्र-II

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) (iii), (ख) (iii), (ग) (i), (घ) (i), (ङ) (i).

2. सही शब्दों से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(क) वह दर्द **के कारण** सारी रात कराहता रहा।

(ख) मेरे घर **के पहले** एक बगीचा है।

(ग) इस विषय पर आपका **से** क्या है।

(घ) मेज **के पास** कुछ रखा हुआ है।

(ङ) कभी किसी का **के विरुद्ध** नहीं करना चाहिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कर्म के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते हैं—(क) अकर्मक क्रिया, (ख) सकर्मक क्रिया।

अकर्मक क्रिया–अकर्मक—अ (बिना) + कर्मक = बिना कर्म के। जिस क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं किया गया हो तथा उसका फल कर्ता पर पड़े तो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जिस क्रिया का फल सीधे कर्ता पर पड़ता हो, उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं। ये क्रियाएँ कर्म रहित होती हैं, जैसे—सोना, डाँटना, चलना, जाना, हँसना, रोना आदि।

सूरज निकल रहा है।

सकर्मक क्रिया–यदि वाक्य में क्रिया के साथ कर्म का भी प्रयोग किया गया हो क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, तो वह सकर्मक क्रिया होती है। जिस क्रिया का प्रभाव कर्ता के स्थान पर कर्म पर पड़ता है उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं; जैसे—पढ़ना, देखना, खाना, पहन्ना, काटना, रखना, धोना, पोंछना आदि।

नीमा केक **काट रही है**।

(ख) स्वयं करें।

(ग) **जो** परिश्रम करेगा **वह** सफल होगा।

जिसको आपने बुलाया था, **वह** बाजार गया है।

जैसा बोओगे **वैसा** काटोगे।

(घ) किसी संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण से बनने वाली क्रिया को **नामधातु** कहते हैं; जैसे—

संज्ञा शब्दों से

खरीद	खरीदना
ठग	ठगना

सर्वनाम शब्दों से

अपना	अपनाना

विशेषण शब्दों से

नरम	नरमाना
टिमटिम	टिमटिमाना

(ङ) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं—

उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम–वक्ता अर्थात् बोलने वाला अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उसे **उत्तम पुरुष सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—**मैं** कल चलूँगा।

मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम–श्रोता से बात करते हुए उसके नाम के बदले जिन सर्वनामों का प्रयोग होता है, उन्हें **मध्यम पुरुष सर्वनाम** कहते हैं; जैसे—**तू** नहीं सुधरेगा।

अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम–जिन सर्वनाम शबदों का प्रयोग वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति के लिए किया जाए, उन्हें अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

वे आपस में लड़ रहे हैं।

4. कोष्ठक में दिए गए शब्द का प्रयोग कर प्रेरणार्थक क्रिया वाला वाक्य बनाइए–

स्वयं करें।

5. निम्नलिखित शब्दों से नामधातु क्रियाएँ बनाइए–

स्वयं करें।

6. निम्नलिखित लोकोक्तियों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

स्वयं करें।

7. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) व्यय (ख) निराशा

(ग) उपेक्षा (घ) सरल

(ङ) सज्जन (च) धरती

8. निम्नलिखित शब्दों के एक शब्द लिखिए–

(क) अजातशत्रु (ख) दीर्घायु

(ग) अज्ञेय (घ) अजर

(ङ) असहनीय (च) शरणागत

(छ) निराधार (ज) लाइलाज